GYH9VH

मेरी हिन्दी पुस्तक

कक्षा ७ के लिए

(तृतीय भाषा)

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक
अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

मेरी हिन्दी पुस्तक

कक्षा ७ के लिए

(तृतीय भाषा)

पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति

प्रो. डॉ. राधाकान्त मिश्र, अध्यक्ष
डॉ. स्मरप्रिया मिश्र
डॉ. रवीन्द्र नाथ मिश्र
डॉ. स्नेहलता दास
डॉ. लक्ष्मीधर दाश
डॉ. नलिनी कुमारी पाढ़ी
डॉ. सौदामिनी मिश्र (प्रभारी)
श्री आशीष कुमार राय

संयोजना :

डॉ. प्रीतिलता जेना
डॉ. तिलोत्तमा सेनापति
डॉ. सविता साहु

प्रकाशक:

विद्यालय ओ गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

प्रथम संस्करण: २०११
२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

यह पुस्तक

यह पुस्तक उन विद्यार्थियों के लिए है जिनकी तृतीय भाषा हिन्दी है । अतः इसमें भाषा सरल रखी गयी है, पर विषय चुनते वक्त उम्र का ध्यान भी रखा गया है ।

छठी कक्षा की पुस्तक से वर्णमाला आदि का पूर्ण परिचय हो चुका है । इसमें उसकी पुनरावृत्ति पहले ही कर दी गई है । पाठ और कविताओं की संख्या तो कम है पर भाषा सीखने के लिए बड़ी-बड़ी अनुशीलनियाँ हैं । बीच-बीच में भाषा शिक्षण की सहायता के लिए कुछ अभ्यास भी दिए गए हैं।

शिक्षकों से अनुरोध है कि वे अध्यापन की नई शैली अपनाएँ । विद्यार्थियों को सीखने का मौका दें । खुद उनकी मदद करें । सातवीं पास होते-होते छात्र-छात्राएँ हिन्दी पढ़ सकें, लिख सकें और बोल भी सकें- उसकी पूरी चेष्टा करें ।

आशा है, यह पुस्तक सबको पसन्द आएगी । सकारात्मक विचार सर्वदा स्वागत किए जाएँगे ।

लेखक मण्डली

विषय सूची

क्र.नं.	विषय	पृष्ठा
१.	हम जानते हैं	1
२.	यह मेरा वतन (कविता)	7
३.	अपना-अपना काम करो	11
४.	बस यात्रा का अनुभव	17
५.	आज इतवार है	25
६.	सीखो (कविता)	30
७.	उत्कलमणि	35
८.	होली आई, होली आई (कविता)	40
९.	धागे का बन्धन	46
१०.	चूहों की चौकड़ी	53
११.	बना दो मधुर मेरा जीवन (कविता)	64
१२.	जंगल रो रहा है	68
१३.	वाद-विवाद	77

हम जानते हैं–

GYR5XJ

१. हिन्दी में अ से औ तक स्वर वर्ण हैं। स्वर वर्ण मात्रा रूप में भी आते हैं, पर व्यंजन वर्णों के साथ ।

वर्ण -	अ	आ					ऋ			औ
मात्रा-		ा					ृ			ौ
जैसे-	क	का					कृ			कौ

(खाली स्थानों को भरिए)

२. हिन्दी में ह्रस्व और दीर्घ मात्राओं का स्पष्ट उच्चारण होता है । दीर्घ मात्रा में अधिक समय लगता है और बल होता है।

३. सभी वर्णों के ऊपर रेखा होती है । इसे शिरोरेखा कहते हैं ।

४. अंत में अ वाले शब्द का हलन्त उच्चारण होता है; जैसे– बात्, सात्, कमल्, खटमल् आदि ।

५. इन शब्दों को जल्दी–जल्दी पढ़िए :

कल	काला	कली	कील	कालू	कूल
काला	काली	केला	काले	भालू	कूल
कोल	कौल	कला	कैलास	बेल	बैल
कि	की	पिता	पीता	मेल	मैल
औरत	औषध	ओस	ऋषि	कृषि	घृत

('ऋ' का उच्चारण 'रि' जैसा होता है ।)

६. फिर पढ़िए : (। पर जोर दीजिए ।)

कल	नल	काला	नीला	गीता	चीता
फल	फूल	घर	घोट	सत्	चित्
राम	आम	राजधानी	चार	चाँद	शरणागत
झटपट	चमचम	चौंसठ	पचहत्तर	निन्यानबे	

हम यह भी जानते हैं :

१. हिन्दी में 'क' से 'ह' तक व्यंजन वर्ण हैं ।

क				ङ
च				
ट				
त				
प				
	य	र	ल	व
	श	ष	स	ह

(खाली स्थानों को भरिए)

२. व्यंजन के अंत में अ मिला होता है । जैसे क् + अ = क यानी क् म् व्यंजन हैं । संयुक्त व्यंजन लिखते समय और बोलते समय पहला व्यंजन हलन्त – (क्) (क),(म्) (म) जैसे लिखा और बोला जाता है ।

३. संयुक्त व्यंजन के पहले व्यंजनों के कई रूप होते हैं–

(i) आधा लिखकर, जैसे– क – क्, ख – ख्, ग –ग्

जैसे – क्क ख्य ग्य

(ii) हलन्त लगाकर, जैसे– छ्, ट्, द् आदि

(iii) पूरे बदले रूप, जैसे –

क् + ष = क्ष

त् + र = त्र

ज् + ञ = ज्ञ

श् + र = श्र

(iii) र के तीन रूप हैं, जैसे–

र् + क = र्क

क् + र =क्र

ट् + र = ट्र

पढ़िए : कर्म – क्रम, ग्राम – गर्म, चक्र – अर्क, कोर्ट – ट्रक ।

५. हम जानते हैं कि ये अलग–अलग ध्वनियाँ हैं–

ब	व	ज	य	श	स

इनको पढ़िए :

बन – वन	काज – कार्य	आज – आय	यश – जग
बस – वश	सूरज – सूर्य	कास – काश	सेर – शेर
बहन – वहन	युवक – सबक	यमुना – यशोदा	यज्ञ–जिज्ञासा

६. निम्नलिखित संयुक्त व्यंजनों को दो तरह से लिखा जाता है–

त् + त = त्त – त्त द् + द = द्द – द्द

क् + त = क्त = क्त द् + य = द्य – द्य

द् + भ = द्भ – द्भ   द् + म = द्म – द्म
श् + च = श्च – श्च   श् + व = श्व – श्व
ह् + न = ह्न – ह्न   ह् + र = ह्र – ह्र
ह् + व = ह्व = ह्व   ह् + य = ह्य – ह्य आदि ।

७. '–ं' और '–ँ':(अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु) सामान्यतः स्वरों के साथ चन्द्रबिन्दु और व्यंजनों के साथ अनुस्वार (बिन्दी) का प्रयोग होता है । स्वरों के साथ अनुस्वार भी आता है ।

आँसू	चंदा	बंध	मंद	कंस	पंप	तंग	संतान
काँटा	चाँद	बाँध	माँद	टंकण	मंगन	गंगा	साँवला

लेकिन : ईंधन, औंधा, ऐंठना आदि स्वरों में बिंदी लगाई जाती है ।
हंस – हँस, अंक – आँक आदि रूप हैं ।

८. ध्यान दीजिए :

ङ, ञ, ण, न और म– इन नासिक्य व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन बनाते समय दो–दो रूपों में लिखा जाता है, जैसे–

कंगन – कङ्गन, कंज – कञ्ज, डंडा – डण्डा, पंत – पन्त, चंपा – चम्पा आदि ।

हम पढ़ सकते हैं–

१. मैं इन शब्दों को साफ – साफ पढ़ लेता हूँ–

डॉक्टर, पक्का, ख्याति, मधुमक्खी, वाग्देवी, उत्कल, तत्काल, रक्त, डंका, चाणक्य, माध्यम, सन्मार्ग, चक्रधर, राष्ट्रीय, वनांचल, सांसद, मशक्कत।

२. क्या तुम इनको पढ़ सकते हो ?

उन्मुक्त, महत्त्व, परम्परा, स्टेशन, साक्षात्कार, राष्ट्रपति, लापरवाह, शीशम, ग्रीष्म, उन्माद, ब्रह्मानन्द, सौन्दर्य, उत्तुंग, गाम्भीर्य ।

३. हमारे गुरुजी इन शब्दों का सही उच्चारण ऐसे सिखाते हैं –

आमरण, ऐनक, ऐरावत, औरत, रुचि, ऊँट, इनाम, सर्वांगीण, चबूतरा, चौक, ऋषि, कर्ण, यज्ञकार्य, वाङ्मय, आकांक्षा, शरबत, शाश्वत, एहसास, बेवकूफ, मर्यादा ।

यह मेरा वतन

GZ1127

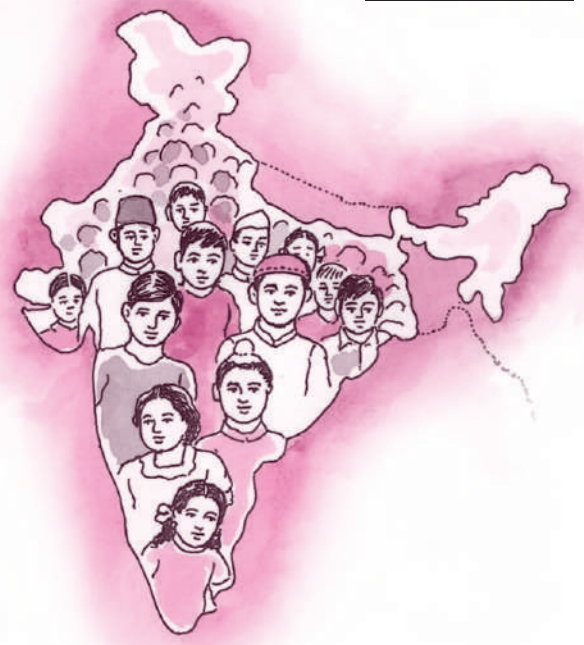

मुक्त गगन है, मृदुल पवन
धूप सुनहरी सुहाना मौसम,
चमकता चाँद तारे चमचम
यह भारत देश, यह मेरा वतन !

हम धीर वीर दिव्य संतान
नहीं मन में तनिक अभिमान,
परवाह नहीं हो मान अपमान
दें शांति मैत्री प्यार का दान ।

हर मानव को अपना मान
दुनिया को बना कुटुम्ब समान,
निडर तत्पर अचल चट्टान
बनाते चलें नये कीर्त्तिमान ।

खतरे में हो 'गर अपनी आन
न्योछावर कर दें अनमोल प्राण,
मातृभूमि के हित मेरे यार !
जीएँ हम मरें भी बारम्बार ।

स्मरप्रिया मिश्र

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों के मन में यह भाव जगाएँ कि उनका वतन भारत महान है। इसलिए वे छात्रों में वीरत्व, त्याग, बलिदान और विश्व बंधुत्व का भाव जगाएँ।

शब्दार्थ :

मृदुल	-	कोमल	चट्टान	-	पत्थर
सुनहरी	-	सोने की रंगवाली,	कीर्त्तिमान	-	यश के निशान
सुहाना	-	सुखकर	खतरा	-	विपत्ति
वतन	-	मातृभूमि	न्योछावर	-	त्याग
तनिक	-	थोड़ा	'गर	-	अगर
परवाह	-	चिंता	अनमोल	-	अमूल्य।
मैत्री	-	दोस्ती			
कुटुम्ब	-	परिवार			

अनुशीलनी

प्रश्न १. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से बताइए :

(i) भारत में कैसा पवन बहता है ?

(ii) भारत का मौसम कैसा है ?

(iii) हमारे मन में क्या नहीं है ?

(iv) हम किसको कुटुम्ब समान बनाएँगे ?

(v) क्या खतरे में होने से हम अपने प्राण न्योछावर कर देंगे ?

प्रश्न २. इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) हमारे देश का परिवेश कैसा है ?

(ii) भारत की संतानों के क्या-क्या गुण हैं ?

(iii) हम किन–किन चीजों का दान देते चलें ?

(iv) दूसरे मानवों के साथ हमारा बर्ताव कैसा हो ?

(v) खतरे में हम क्या करें ?

(vi) मातृभूमि के हित हम क्या करें ?

प्रश्न ३.(i) भारत देश –मेरा वतन का क्या अर्थ है ?

(ii) 'परवाह नहीं हो मान अपमान' का तात्पर्य समझाइए ।

(iii) 'निडर तत्पर अचल चट्टान' का मतलब क्या है ?

प्रश्न ४. शिक्षक प्रत्येक छात्र और छात्रा को मौखिक रूप से अपनी मातृभूमि भारतवर्ष की कुछ विशेषताएँ बताने को प्रेरित करें ।

भाषा - कार्य :

प्रश्न ५. विशेषण संज्ञा

जैसे– मुक्त गगन

ऐसे शब्दों को छाँटिए । नीचे लिखिए ।

प्रश्न ६. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए :

यह भारत देश है ।

हमारे मन में अभिमान नहीं है ।

भारत – एक देश का नाम है ।

देश – सभी देशों की जाति या वर्ग का नाम है ।

अभिमान – एक भाव का नाम है ।

नाम को बतानेवाले शब्द को संज्ञा कहते हैं ।

प्रश्न ७. निम्नलिखित शब्दों में से संज्ञा शब्दों को छाँटिए :

हम, हिमालय, गगन, शांति, पत्थर, सामने, नया, लकड़ी, राकेश, उजला ।

प्रश्न ८. सही मिलान कीजिए :

मुक्त गगन है	अचल चट्टान
हम धीर वीर	अनमोल प्राण
न्योछावर कर दें	मृदुल पवन
निडर तत्पर	दिव्य संतान

आपके लिए काम

आप हिन्दी में रचित अन्य दो देशप्रेममूलक कविताओं का संग्रह करके मित्रों को सुनाइए।

आप ओड़िआ मे रचित दो देशप्रेममूलक कविताएँ संग्रह करके कक्षा में सभी को सुनाइए।

देश की रक्षा के लिए अपने प्राण न्योछावर करने वाले कुछ देशप्रेमियों के चित्र अखबारों से काटकर अपने पास रखिए।

अपना-अपना काम करो

GZ9X1U

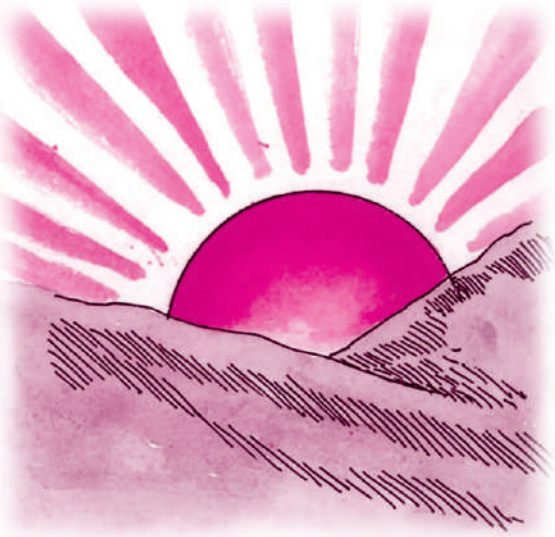

एक दिन की बात है । सुहाना सा सवेरा। एक आदमी को पासवाले गाँव में जरूरी काम था । वह फौरन घर से निकल पड़ा । सोचा– अभी मौसम अच्छा है । जल्दी से काम निपटा लूँगा । वह तेजी से डग भरता हुआ चलने लगा । उसने कमर में धोती बाँध ली, एक कुर्ता पहन लिया और गले में गमछा लपेट लिया ।

बड़ी अच्छी हवा चल रही थी । मंद पवन ! वह खुश हुआ । थोड़ी दूर चला ही था कि पूरब से सूरज उग आया । लाल लाल सा वह गोला । आदमी उसे देख काफी खुश हुआ । लेकिन उसे तो चलना ही था न !

इतने में उसे लगा कि सूरज और हवा आपस में झगड़ रहे थे । सूरज ने कहा– "मैं न होता तो संसार मर जाता ।" हवा बोली– "भैया ! यह तो सोचो कि अगर मैं न होती तो कौन साँस लेता ?" सूरज बोला– "बहन, तुम्हारी तो ठाट निराली है, कभी रुक–रुक कर चलती हो तो कभी तेज । कभी एकदम सन्न । बोलो तो,

सबको क्यों परेशान करती हो ?'' हवा बोली– ''भैया ! तुम क्या करते हो ? इतना तपते हो कि दुनिया तप जाती है । परेशान होकर कहती है– कब यह निगोड़ा डूब जाय ।''

पथिक उनकी बात सुन रहा था पर जल्दी–जल्दी चलता चला जा रहा था । तब तक गुस्से में आकर हवा सनसना रही थी और सूरज भी तैश में आकर काफी गर्म हो गया था । दोनों ने सोचा– चलो, इस पथिक से पूछते हैं । यह बता देगा कि दोनों मे से कौन अच्छा है और कौन बड़ा है ।

पथिक ने दोनों की बातें सुनीं । बोला– ''देखो जी, तुम अपनी–अपनी औकात समझो । दुनिया में न कोई बड़ा है न कोई छोटा । बोलो तो, मेरा पाँव बड़ा है कि सिर ! चलने के लिए पाँव चाहिए और सोचने को सिर । इनमें कौन छोटा है और कौन बड़ा ? चलो, दोनों अपना–अपना काम करो । झगड़ा छोड़ो । न मुझको सताओ और न ही दुनिया को । किसी को न सताने वाला ही सबसे अच्छा होता है । वही सबसे बड़ा है ।''

सब खुश हुए और अपने अपने रास्ते चलते बने ।

– लक्ष्मीधर दाश

शिक्षक के लिए :

शिक्षक कोई कहानी सुनाकर छात्रों के मन में अहंकार के दुष्परिणाम और सहयोगमूलक मनोभाव की उपयोगिता पर श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न करने का प्रयास करेंगे।

शब्दार्थ :

सुहाना	-	सुहावना, सुंदर	सन्न	-	रुक जाना
जरूरी	-	आवश्यक	तपना	-	गर्म होना
डग भरना	-	चलना	निगोड़ा	-	एक गाली
काफी	-	बहुत	तैश	-	गुस्सा
आपस में	-	परस्पर	औकात	-	योग्यता
निराली	-	आश्चर्यजनक	सनसनाना	-	सन्सन् की आवाज करना

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से बताइए :

(i) आदमी को कहाँ जरूरी काम था?
(ii) जल्दी से काम निपटाने के लिए आदमी ने क्या किया?
(iii) आदमी ने गले में क्या लपेट लिया?
(iv) उगता हुआ सूरज कैसा था?
(v) हवा और सूरज ने किससे पूछने को सोचा?
(vi) हमें सोचने के लिए क्या चाहिए?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) आदमी ने क्या सोचा ?
(ii) उसने क्या पहना था ?
(iii) सूरज और हवा में क्यों झगड़ा हुआ ?
(iv) सूरज ने हवा से क्या कहा ?
(v) पथिक ने उन्हें क्या उत्तर दिया ?
(vi) हमें क्या करना चाहिए ?

प्रश्न ३. इन प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में दीजिए :

(i) आदमी कहाँ जा रहा था ?

(ii) वह किसे देखकर खुश हुआ ?

(iii) कौन झगड़ा सुन रहा था ?

(iv) गुस्से में हवा की हालत कैसी हो रही थी ?

(v) तैश में आकर सूरज कैसा हो गया ?

(vi) वे पथिक से क्या पूछते हैं ?

(vii) कौन सबसे अच्छा होता है ?

प्रश्न ४. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर भरिए :

(आपस में, दुनिया, सिर, सुहाना–सा, लाल–लाल–सा, औकात)

(i) ..... सबेरा ।

(ii) सूरज और हवा ..... झगड़ रहे थे ।

(iii) ..... सा सूरज का गोला ।

(iv) इतना तपते हो कि ..... तप जाती है ।

(v) पथिक ने कहा, ''तुम अपनी – अपनी .... समझो ।''

(vi) चलने के लिए पाँव चाहिए और सोचने को ..... ।

भाषा - कार्य

संज्ञा की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं ।

जैसे – लाल सूरज । सूरज संज्ञा है । लाल उसकी विशेषता बताता है ।

प्रश्न ५ नीचे कुछ विशेषण और कुछ संज्ञाएँ एक साथ आई हैं । उन्हें अलग–अलग कीजिए :

अच्छी हवा	अपना काम
काफी खुशी	थोड़ी दूर
मंद पवन	लाल गोला

प्रश्न ६. 'क' स्तम्भ के शब्दों का 'ख' स्तम्भ के पर्यायवाची शब्दों के साथ मिलान कीजिए :

'क'	'ख'
तैश	योग्यता
जरूरी	आश्चर्यजनक
औकात	बहुत
निराली	आवश्यक
काफी	गुस्सा

प्रश्न ७. निम्नलिखित शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

तैश, परेशान, दुनिया, काफी, निराली, औकात, खुश ।

प्रश्न ८ . निम्नलिखित शब्दों की मात्रागत अशुद्धियों को सुधार कर लिखिए :

सुरज, शांस, परेसान, तूम, खूस ।

आपके लिए काम

आप ऐसा एक चित्र बनाइए जिसमें छात्रों को मिलजुलकर सामूहिक सफाई जैसे सामाजिक कार्य करते हुए दिखाया गया हो।

फुटवॉल मैच के समय एक दल के खिलाड़ी मिलजुलकर न खेलने से क्या असुविधा होती है, इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

क्या आप जानते हैं ?

१. अ आ क म आदि ध्वनियाँ हैं ।

उनके दो रूप हैं – उच्चरित रूप (ध्वनि)

– लिखित रूप (वर्ण)

२. एक या अनेक ध्वनियों का उच्चारण करने से शब्द बनता है । शब्द का अर्थ होता है ।

३. अनेक शब्दों को एक साथ बोलने से वाक्य बनता है ।

वाक्य का निश्चित अर्थ होता है ।

वाक्य के दो अंग हैं – १. कर्त्ता – राम

२. क्रिया – जाता है ।

४. कर्त्ता के – १. लिंग: पुंलिंग – राम जाता है ।

स्त्रीलिंग – सीता जाती है ।

२. वचन: एक वचन – एक लड़का जाता है ।

बहु वचन – दो लड़के जाते हैं ।

३. पुरुष:उत्तम – मैं – हम

मध्यम – तू – तुम, आप

अन्य – वह – वे

विशेष

५. हिन्दी में कर्त्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार क्रिया बनती है ।

बस यात्रा का अनुभव

GZIT3H

खोरधा जिले का एक छोटा सा गाँव है बंगीदा । गाँव के एक छोर पर है उच्च प्राथमिक विद्यालय । इस विद्यालय के छात्र-छात्राओं को लेकर भुवनेश्वर घुमाने का कार्यक्रम तय हुआ । प्रधान शिक्षिका ने छात्र-छात्राओं से कहा कि, ''भुवनेश्वर ओड़िशा की राजधानी है । अगले रविवार की सुबह हमसब वहाँ शिक्षा-भ्रमण पर जाएँगे । वहाँ जाकर राज्य संग्रहालय और ताराघर देखेंगे ।"

रविवार आ गया । सभी बच्चे नाश्ते के डिब्बे और पानी की बोतलें लेकर पहुँच गए । भुवनेश्वर की सैर कराने के लिए एक बड़ी बस की व्यवस्था की गई थी। प्रधान शिक्षिका ने कहा, ''बच्चो ! तुम सब लाइन बनाकर खड़े हो जाओ । फिर एक एक करके बस के अंदर जाकर बैठो । देखो, हल्ला मत करना । गुरुजी और गुरुमाँ तुम्हारे बैठने की व्यवस्था कर देंगे ।'' गाड़ी चलते वक्त कोई भी खिड़की से बाहर अपना हाथ या सर मत निकालना ।"

बस भुवनेश्वर की ओर चल पड़ी । बच्चे खिड़कियों से सड़क के दोनों किनारों के दृश्य देखकर खुश होने लगे । कोई कोई अपने डिब्बे खोलकर नाश्ता करने लगे । शिक्षक ने कहा-, ''तुम सब अपना-अपना नाश्ता कर लो । पर केले के छिलके बिस्किट के खाली पैकेट, पत्ते या कागज खिड़की से बाहर मत फेंकना। उसे अपने डिब्बे में ही रखना । हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए, जिसके कारण राह चलते लोगों को परेशानी हो ।"

कुछ बच्चों ने देखा कि बस के ड्राइवर ने अपनी छाती पर एक बेल्ट बाँध रखी है । उनको बड़ा आश्चर्य हुआ । शिक्षक समझ गए कि छात्र बेल्ट के बारे में जानना चाहते हैं । उन्होंने समझा दिया- सड़क पर गाड़ी चलाते समय ड्राइवर को यह सीट बेल्ट बाँधनी चाहिए । क्योंकि अगर कोई दुर्घटना हो जाए तो उसे ज्यादा चोट नहीं लगेगी । एक छात्रा ने जानना चाहा कि बस में रेड क्रॉस निशानवाला बक्सा क्यों लटक रहा है । शिक्षिका ने बताया-यह 'प्राथमिक उपचार

पेटिका' है । दुर्घटना के समय घायल यात्रियों के प्राथमिक उपचार के लिए इसमें कुछ जरूरी सामान और दवाइयाँ हैं ।

बच्चे जल्दी भुवनेश्वर पहुँचने के लिए उतावले हो रहे थे। इसलिए गाड़ी तेज चालाने के लिए चिल्लाकर ड्राइवर से कहने लगे । लेकिन शिक्षक ने बीच में टोका- ''देखो बच्चो ! तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए । इससे ड्राइवर का ध्यान बँट जाने का डर रहता है । तुम बाईं तरफ देखो । कुछ ही दूरी पर एक बोर्ड लगा है । उस पर (४०) की संख्या चिह्नित की गई है । इसका मतलब, यहाँ किसी भी गाड़ी की गति ४० कि.मी. से अधिक नहीं होनी चाहिए । जहाँ स्कूल हो, वहाँ गाड़ी की गति और भी धीमी करने का निर्देश रहता है ।

इतने में एक दूसरी बस का ड्राइवर पीछे से बार बार हॉर्न बजाता हुआ ओवरटेक करने की कोशिश करने लगा । तो ड्राइवर ने अपनी बस को थोड़ा बाईं तरफ करके दाहिने हाथ से उस बस को आगे निकल जाने का इशारा किया । शिक्षक ने कहा- देखो हमारा ड्राइवर कितना होशियार है । सड़क सुरक्षा के लिए ड्राइवरों को एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ नहीं करनी चाहिए । क्योंकि ज्यादातर दुर्घटनाएँ सतर्कता के साथ ओवरटेक न करने से होती है ।

हमारी बस आकर खंडगिरि के पास रुकी । ड्राइवर ने इंजन बंद कर दिया । छात्रों ने कहा, ''गुरुजी ! गाड़ी तो एकदम रुक गई । शिक्षक ने समझाया, ''देखो, यह एक ट्रैफिक पोस्ट है । कुछ ट्रैफिक पुलिस भी यहाँ हैं । सामने ट्रैफिक लाइट है और वहाँ लाल बत्ती जल रही है । इसमें तीन रंगों की बत्तियाँ होती हैं । जैसे लाल, पीली और हरी । लाल बत्ती जलने पर गाड़ियाँ रुकती हैं । लाल बत्ती जलने से पहले पीली बत्ती जलती है । इसका मतलब है कि चालक अपनी गाड़ियों कि गति धीमी करके रुकने की तैयारी करें । अब हरी बत्ती जलने पर गाड़ियाँ आगे बढ़ पाएँगी । उतने समय तक गाड़ी के इंजन को चालू रखने से इंधन व्यर्थ नष्ट होता है और धुएँ के कारण प्रदूषण भी फैलता है । जहाँ ट्रैफिक में भीड़ नहीं रहती वहाँ केवल पीली बत्ती टिमटिमाती है। इसका अर्थ है कि वाहन चालक इधर-उधर देखकर गाड़ी धीरे से पार कराता है।

इतने में सामने बैठे कुछ बच्चे चिल्ला उठे - देखो, देखो ! ये लोग कैसे बस के सामने से होकर रास्ता पार कर रहे हैं । शिक्षक ने समझाया, ''देखो बच्चो ! वे लोग जहाँ रास्ता पार कर रहे हैं, वहाँ सड़क पर काली और सफेद धारवाली पट्टी का चिह्न बनाया गया है । इसे जेब्रा क्रॉसिंग कहते हैं । जब ट्रैफिक सिगनल पर गाड़ियाँ रुकती हैं, तो पैदल चलते लोग इसी जेब्रा क्रॉसिंग पर रास्ता पार करते हैं।

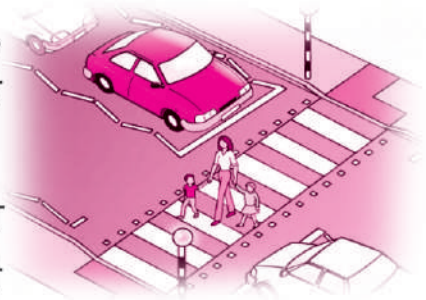

इससे दुर्घटना का खतरा नहीं रहता । जहाँ पर जेब्रा क्रॉसिंग नहीं है, वहाँ लोगों को दोनों तरफ से आनेवाली गाड़ियों पर ध्यान देना चाहिए । जब किसी ओर से गाड़ी न आती हो तब रास्ता पार करना चाहिए। रास्ते पर कुछ और ट्रेफिक पोस्ट पार करती हुई बस राज्य संग्रहालय के पास पहुँची ।

संग्रहालय के भीतर प्राचीन मूर्त्तियाँ, कलाकृतियाँ, ताड़ के पतों की पोथियाँ, पुराने जमाने के सिक्के, तरह तरह के पुराने वस्त्र, आभूषण, अस्त्रशस्त्र आदि देखकर बच्चे बहुत खुश हुए । उन्हें बहुत-सी जानकारियाँ मिली ।

संग्रहालय से निकलते निकलते दो बज गए । बच्चों को भूख लग रही थी । एक शिक्षक ने सबके लिए नजदीक के भोजनालय में भोजन की व्यवस्था कर दी थी। रास्ता पार करके भोजनालय की ओर जाना था । बड़े शहर में रास्ता पार करना एक कठिन कार्य है । शिक्षक ने इसके लिए ट्रैफिक पुलिस की मदद ली । उन्होंने दोनों ओर से आती हुई गाड़ियों को कुछ देर के लिए रोककर बच्चों को रास्ता पार कराया । उसी समय एक दृष्टिहीन व्यक्ति का हाथ पकड़कर कुछ छात्रों ने उन्हें रास्ते के दूसरे छोर पर छोड़ दिया । शिक्षिका ने कहा- तुम लोगों ने यह एक अच्छा कार्य किया । हमें इस प्रकार के दिव्यांगों की मदद करनी चाहिए ।

भोजनालय में खाना खा लेने के बाद बस ताराघर की ओर चल पड़ी । भुवनेश्वर का यह पठाणि सामंत ताराघर बहुत ही प्रसिद्ध है । शिक्षक ने छात्र-छात्राओं को बताया कि- देखो यहाँ सड़क के दोनों तरफ पैदल चलनेवालों के लिए थोड़ी ऊँचाई वाले रास्ते बनाए गए हैं । इसे फूटपाथ कहते हैं । तुम सब इस फूटपाथ से होकर ताराघर की ओर चलो । वहाँ हम

ग्रह नक्षत्रों की गतिविधि के बारे में जानेंगे ।

भुवनेश्वर से निकलते-निकलते शाम हो गई । रास्ते में एक जगह पर बहुत लोग जमा हुए थे। सबने देखा कि एक ट्रक के सामने मोटर साइकिल पड़ी हुई है। भीड़ के कारण गाड़ी को कुछ समय के लिए वहाँ रोकना पड़ा । ड्राइवर के पूछने पर एक बुजुर्ग व्यक्ति ने बताया- आजकल के नौजवान किसकी सुनते हैं क्या ? कुछ तो गाड़ी इतना तेज चलाते हैं कि देखकर डर लगता है । यह युवक गाड़ी चलाते वक्त मोबाईल फोन पर बातें कर रहा था, इसलिए अनमनां भी था । उसने हेलमेट भी नहीं पहना था । खड़े हुए ट्रक के पीछे उसकी मोटर साइकिल टकरा गई । उसके सर से खून बहने लगा । अब एंबुलैंस से अस्पताल भेज दिया गया है ।

यह सुनकर सभी दु:खी हो गए । शिक्षक ने कहा- बच्चो ! अगर हम सावधान रहेंगे, तो ऐसी दुर्घटनाओं से बच सकेंगे । सड़क पर सुरक्षित यातायात के लिए सबको सावधान रहना जरूरी है ।

आशीष कुमार राय

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों को सड़क सुरक्षा संबन्धी जानकारियाँ प्रदान करने के लिए बस द्वारा भुवनेश्वर एक शैक्षिक परिभ्रमण पर जाने का विवरण प्रस्तुत करेंगे । बस-यात्रा के दौरान सड़क पर किसी वाहन से जाते समय किन-किन बातों के प्रति ध्यान देना चाहिए, क्या क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए इसके प्रति छात्रों को मार्गदर्शक के रूप में साथ जाने वाले शिक्षक बताएँगे और आवश्यकता पड़ने पर अन्य महत्वपूर्ण बातों से भी परिचित कराएँगे ।

शब्दार्थ :-

शब्द		अर्थ
छोर	-	प्रांत, सीमा
सैर	-	भ्रमण
हल्ला	-	शोर
खिड़की	-	झरोखा
अगर	-	यदि
चोट	-	आघात
उपचार	-	चिकित्सा
यात्री	-	मुशाफिर
घायल	-	आहत
उतावला	-	व्यग्र
टोकना	-	रोकना
ध्यान बंटना	-	अनमना होना
मतलब	-	उद्देश्य
कोशिश	-	चेष्टा
इशारा	-	संकेत
होड़	-	प्रतिद्वंद्विता
होशियार	-	चालाक
प्रदूषण	-	अधिक मात्रा में दूषित
खतरा	-	विपदा
सिक्का	-	धातु की मुद्रा
नजदीक	-	पास
मदद	-	सहायता
दिव्यांग	-	भिन्नक्षम
बुजुर्ग	-	अधिक आयु के व्यक्ति

विशेष :-

खंडगिरि - भुवनेश्वर का एक दर्शनीय स्थान, जो कि प्राचीन जैन गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है ।

संग्रहालय - जहाँ पर प्राचीन वस्तुओं को संगृहीत करके प्रदर्शित की जाती है ।

ताराघर - जिस भवन में ग्रह नक्षत्रों की गतिविधि प्रदर्शित की जाती है ।

अनुशीलनी

प्रश्न - १ - निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) विद्यालय के बच्चे क्या देखने भुवनेश्वर गए ?

(ii) प्रधान शिक्षिका ने बच्चों से क्या कहा ?

(iii) बच्चे जब बस में बैठ गए, तब शिक्षक ने क्या कहा ?

(iv) बस चलते समय क्यों नहीं चिल्लाना चाहिए ?

(v) बस में 'प्राथमिक उपचार पेटिका' रखना क्यों आवश्यक है ?

(vi) ट्रैफिक पोस्ट पर अलग अलग रंग की बत्तियाँ क्या सूचित करती हैं ?

(vii) ट्रैफिक पोस्ट पर गाड़ी रोकते वक्त इंजन को क्यों बंद कर देना चाहिए ?

(viii) जेब्रा क्रॉसिंग से लोगों की क्या सुविधा होती है ?

(ix) बच्चों ने संग्रहालय में क्या क्या देखा ?

(x) युबक की मोटर साइकिल ट्रक से क्यों टकराई ?

प्रश्न - २ . निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में दीजिए :

(I) ओड़िशा की राजधानी का नाम क्या है ?

(ii) बच्चे क्या लेकर बस के पास पहुँचे ?

(iii) 'प्राथमिक उपचार पेटिका' पर कौन सा चिह्न रहता है ?

(iv) ड्राइवर ने कहाँ पर इंजन बंद कर दिया ?

(v) ट्रैफिक पोस्ट पर कितने रंग की बत्तियाँ रहती है ?

(vi) सड़क पर काली-सफेद धारवाली पट्टी को क्या कहते हैं ।

(vii) संग्रहालय के पास किसने बच्चों को रास्ता पार कराया ?

(viii) सड़क के दोनों तरफ थोड़ी ऊँचाई वाले रास्ते को क्या कहते हैं ?

(ix) भुवनेश्वर के ताराघर का नाम क्या है ?

(x) युवक की मोटर साइकिल किससे टकराई ?

भाषा-कार्य

प्रश्न - ३. उदाहरण के अनुसार बदलिए :

बच्चा - बच्चे खिड़की - खिड़कियाँ

डिब्बा	-	गाड़ी	-
तारा	-	बत्ती	-
नाश्ता	-	नारी	-
केला	-	राजधानी	-

प्रश्न - ४. उदाहरण के अनुसार बदलिए :

छात्र - छात्रा

शिक्षक -

शिष्य -

लेखक -

पाठक -

प्रश्न - ५. 'क' स्तंभ के साथ 'ख' स्तंभ का मिलान कीजिए :

(क)	(ख)
काली	रंग
पीली	बस
धीमी	पट्टी
बड़ी	बत्ती
तीन	गति

प्रश्न - ६. कोष्ठक में दिए गए परसर्गों से खाली जगहों को भरिए :

(से, का, को, की, ने)

(i) भुवनेश्वर ओड़िशा _____ राजधानी है ।

(ii) गाड़ी की गति ४० कि.मी. _____ अधिक नहीं होनी चाहिए ।

(iii) इससे दुर्घटना _____ खतरा नहीं रहता ।

(iv) शिक्षक _____ कहा ।

(v) बच्चों _____ भूख लग रही थी ।

आपके लिए काम :-

सड़क सुरक्षा पर एक संक्षिप्त निबंध तैयार करें । इसके लिए शिक्षक/शिक्षिका की सहायता लें । तथा देखी हुई दुर्घटनाओं का बर्णन कक्षा में करें ।

आज इतवार है

GZSP55

आज इतवार है । स्कूल और दफ्तर बंद हैं । यह छुट्टी का दिन है । माँ बाजार जाती हैं । उनकी मदद करने को मदन भी कभी-कभी चला जाता है । रानी को तो बाजार में घूमना अच्छा लगता है । वह पिताजी को साथ ले जाती है । सब मिलकर जरूरत की चीजें खरीदते हैं ।

माँ सब्जी की दुकान में पहुँचीं । इस बाजार में ताजा सब्जियाँ मिलती हैं । माँ ने आलू, प्याज, बैंगन, पपीता, गाजर, मूली, परवल, पालक, कच्चा केला, करैला, मिर्च, नीब्बू, फूल गोभी आदि कई सब्जियाँ खरीदीं ।

रानी को कई सब्जियों के नाम मालूम नहीं थे । उसने उनको पहली बार पहचाना ।

मदन हलवाई की दुकान में पहुँचा । रोज स्कूल के लिए टिफिन ले जाना पड़ता है । उसने कई मिठाइयाँ खरीदीं । वहाँ

शाश्वत मिल गया । उसने अपनी पसंद की मिठाई और नमकीन चीजें देखीं । दोनों में बातचीत हुई–

मदन– मुझे तो भाई, जलेबी बहुत अच्छी लगती है ।

शाश्वत –और रसगुल्ले ?

मदन – हाँ, वे भी अच्छे हैं, पर जलेबी से ज्यादा नहीं ।

पिताजी को फल बहुत पसंद हैं । उन्होंने रानी को पास बुलाकर कई तरह के फल खरीदे ।

बाजार का माहौल बहुत अच्छा लगा । भीड़ ज्यादा थी । फिर भी सबको अपना काम करना पड़ा ।

हम सोमवार को स्कूल जाते हैं। हमारी क्लास टीचर रश्मि शर्मा हम बच्चों से पूछती हैं– कल तुमने क्या क्या चीजें खरीदीं। तब एक–एक को बताना पड़ता है ।

(शिक्षक हर बच्चे से पूछें । वह बोले ।)

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों से पहले पूछेंगे कि वे इतवार के दिन घर पर क्या-क्या करते हैं। छात्र उनका वर्णन करेंगे।

छात्र अपना अनुभव बताते समय जिन हिन्दी शब्दों को बताने में असमर्थ होंगे, शिक्षक उन शब्दों को बता देंगे।

शिक्षक छात्र-छात्राओं के मन में यह भावना भर दें कि घर पर उनको अपनी शक्ति के अनुसार माँ-वाप की सहायता करनी चाहिए।

शब्दार्थ :

इतवार - रविवार, नमकीन - नमक, माहौल - परिवेश

अनुशीलनी

प्रश्न १. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से बताइए:

(i) कौन-सा दिन छुट्टी का दिन होता है ?

(ii) मदन किसके साथ बाजार जाता है ?

(iii) माँ कहाँ से सब्जियाँ खरीदती हैं ?

(iv) मदन को बाजार में कौन मिल गया ?

(v) रानी की क्लास टीचर का नाम क्या है ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

(i) इतवार के दिन कौन-कौन बाजार गए थे ?

(ii) माँ ने क्या-क्या सब्जियाँ खरीदीं ?

(iii) मदन ने क्यों मिठाइयाँ खरीदीं ?

(iv) शाश्वत ने वाजार में क्या देखा ?

(v) मदन को कौन-सी मिठाई सबसे अच्छी लगती है ?

(vi) रश्मि शर्मा ने बच्चों से क्या पूछा ?

३. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर खाली जगहें भरिए:

(अच्छी, अच्छे, ताजा, अपनी)

(i) रसगुल्ले भी..... हैं।

(ii) मुझे जलेबी बहुत ..... लगती है।

(iii) उसने ..... पसंद की मिठाई देखी।

(iv) बाजार में ..... सब्जियाँ मिलती हैं।

४. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है, छाँटिए :

(i) पिताजी ने सब्जियाँ खरीदीं।

(ii) हम रविवार को स्कूल जाते हैं।

(iii) शाश्वत ने जलेवी खरीदी।

(iv) क्लास टीचर का नाम रश्मि शर्मा है।

(v) मदन को रसगुल्ले अधिक पसंद है।

भाषा-कार्य

१. कोष्ठक में दिए गए परसर्गें से सही परसर्ग चुनकर खाली जगहें भरिए:

(के, को, से, ने,का)

(i) वह पिताजी ..... साथ जाती है।

(ii) यह छुट्टी ..... दिन है।

(iii) माँ ..... सब्जियाँ खरीदीं।

(iv) टीचर बच्चों ..... पूछती है।

(v) पिताजी ने कई तरह ..... फल खरीदे।

२. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करके वाक्य वनाइए:

बाजार, जरूरत, मालूम, रोज, पसंद, ज्यादा, भीड़, माहौल

३. 'क' विभाग के शब्दों के साथ 'ख' विभाग के शब्दों का उपयुक्त जोड़े बनाइए :

क	ख
ताजा	चीजें
जरूरत की	मिठाई
ज्यादा	सब्जियाँ
पसंद की	भीड़

आपके लिए काम

आप इस पाठ में आई सब्जियों के नाम अपनी मातृभाषा में क्या हैं, उन्हें शिक्षिका से पूछकर लिखिए। आप बाजार में मिलने वाली विभिन्न मिठाइयों के नाम पूछकर हिन्दी में लिखिए।

सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो
भौंरों से नित गाना ।
तरु की झुकी डालियों से नित
सीखो शीश झुकाना ।

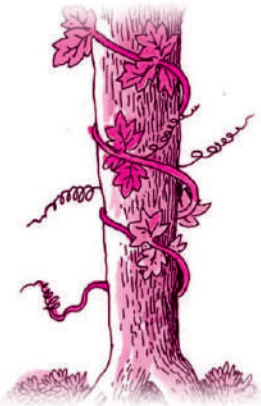

सूरज की किरणों से सीखो
जगना और जगाना
लता और पे ड़ोंसे सीखो
सबको गले लगाना ।

दीपक से सीखो जितना हो
सके अँधेरा हरना
पृथ्वी से सीखो जीवों की
सच्ची सेवा करना।

जलधारा से सीखो आगे
जीवन–पथ पर बढ़ना
और धुएँ से सीखो हरदम
ऊँचे ही पर चढ़ना ।

सत्पुरुषों के जीवन से
सीखो चरित्र निज गढ़ना
अपने गुरु से सीखो बच्चो
उत्तम विद्या पढ़ना ।

–सोहनलाल द्विवेदी

शिक्षक के लिए :

शिक्षक छात्रों को बताएँगे कि प्रकृति के तत्व हमें कोई-न-कोई सीख देते हैं। हम उन्हें सीखें।

शिक्षक छात्रों को बताएँगे कि हम जीवन भर दूसरों के गुणों से कुछ-न-कुछ सीखते हैं। हम इन गुणों को अपनाकर महान बन सकते हैं।

शब्दार्थ :

शब्द	-	अर्थ
नित	-	रोज
भौंरा	-	भ्रमर
शीश-झुकाना	-	सिर नीचे करना
तरु	-	पेड़
गले लगाना	-	प्रेम करना
अंधेरा	-	अंधकार, अज्ञान
सत्पुरुष	-	सत्पुरुष, महामानव

अनुशीलनी

१. निम्नलिखत प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) हम किससे हँसना सीखेंगे ?

(ii) हम भौंरों से क्या सीखेंगे ?

(iii) सूरज की किरणों से हम क्या सीखेंगे ?

(iv) हम किससे अपना चरित्र गढ़ना सीखेंगे ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) वृक्ष की झुकी डालियों से हमें क्या सीखना चाहिए?

(ii) जगने की प्रेरणा हमें किससे मिलती है?

(iii) लता और पेड़ क्या सिखाते है?

(iv) दीपक से हम क्या सीखते हैं?

(v) जलधारा से हमें क्या सीखना चाहिए?

(vi) धुएँ से हम क्या सीखेंगे?

(vii) सत्पुरुष और गुरु से हमें क्या सीखना है?

प्रश्न ३. नीचे एक ओर सिखाने वालों के नाम और दूसरी ओर उनसे मिलने वाली सीखें दी गयी हैं। उनके सही जोड़े बनाइए।

(क)	(ख)
धुआँ	सबकी सेवा करना
फूल	आगे बढ़ना
लता और पेड़	ऊपर चढ़ना
भौंरा	गले लगाना
सूरज की किरण	हँसना
दीपक	गाना
पृथ्वी	अंधेरा हरना
जलाधारा	जगना और जगाना

प्रश्न ४.निम्नलिखित शब्दों के आगे और पीछे की जगहों पर सही शब्द भरिए:

(क) ..... शीश .....।

(ख) ..... सेवा .....।

(ग) ..... पथ पर .....।

(घ) ..... गुरु से सीखो .....।

(ङ) ..... विद्या .....।

भाषा कार्य :

प्रश्न ५. नीचे दिए गए शब्दों को विपरीत अर्थवाले शब्दों के साथ मिलाइए :

अंधकार	नीचा
अज्ञान	असत्
जीवन	पराया
अपना	प्रकाश
सत्	मृत्यु
ऊँचा	ज्ञान

संज्ञा के बदले आनेवाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं, जैसे-

राम सातवीं कक्षा में पढ़ता है।
वह रोज विद्यालय जाता है।
'वह' सर्वनाम है जो संज्ञा 'राम' के बदले आया है।

नीचे कुछ सर्वनाम दिए गए हैं।

मैं, हम, तू, आप, वह, यह, वे, ये, अपना, कौन, क्या, जो, कोई आदि।

अब हम सर्वनाम लगाकर वाक्य बनाना सीखें–

पुंलिंग

मैं	=	काम करता हूँ ।	कर रहा हूँ ।	कर रहा था ।	करूँगा ।
हम	=	काम करते हैं ।	कर रहे हैं ।	कर रहे थे ।	करेंगे ।
तू	=	काम करता है ।	कर रहा है ।	कर रहा था ।	करेगा ।
तुम	=	काम करते हो ।	कर रहे हो ।	कर रहे थे ।	करोगे ।
वह	=	काम करता है ।	कर रहा है ।	कर रहा था ।	करेगा ।
वे	=	काम करते हैं ।	कर रहे हैं ।	कर रहे थे ।	करेंगे ।

स्त्रीलिंग

प्रश्न ६. ऊपर के वाक्यों को स्त्रीलिंग में लिखिए :

मैं =
हम =

तू =

वह =

वे =

प्रश्न ७. वचन के अनुसार वाक्यों को बदलिए ।

(i) तू पढ़ता है । (ii) वे खाएँगे। (iii) मैं लिख रहा था ।

(iv) वह बोलेगा । (v) हम दौड़ेंगे ।

(शिक्षकों से अनुरोध है कि विद्यार्थियों को ऐसे विभिन्न सरल वाक्य बनाने में मदद करें ।)

प्रश्न ८. नीचे दिए गएउदाहरण के अनुसार खाली जगहें भरिए :

लिखना (खुद)	लिखाना (किसी दूसरे के द्वारा)
पढ़ना	
हँसना	
खेलना	
करना	
झुकना	

(दूसरे प्रकार की क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं ।)

आपके लिए काम:

१. इस कविता को कंठस्थ कीजिए ।

२. उगता हुआ लाल सूरज, नदी, जंगल, पेड़-पौधे, फूल, भौंरा आदि से एक सुंदर चित्र बनाइए । उसे कक्षा में दिखाकर बताइए कि हम किससे क्या सीख सकते हैं ।

उत्कलमणि

H92BZX

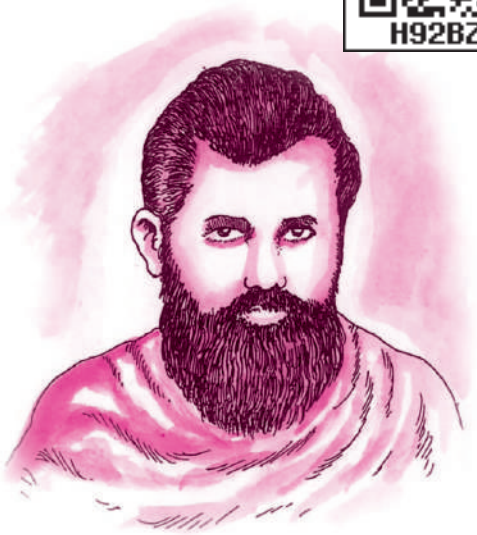

कुछ ही दिन पहले की बात है । तब हमारे देश में अंग्रेज लोग शासन करते थे । पर वे जनता को संतुष्ट नहीं कर पाते थे । शासक-वर्ग प्रजा के सुख-दुःख से बे-खबर और बेपरवाह रहते थे ।

ओड़िशा के कुछ नव-युवकों ने मिलकर पुरी के पास साक्षिगोपाल में सत्यवादी वन-विद्यालय बनाया था । इस विद्यालय में ज्ञान-प्रदान के साथ-साथ चरित्र-निर्माण, नैतिक शिक्षा, देश सेवा पर भी बल दिया जाता था । छात्रों को बढ़ई का काम, खेती का काम, चित्रकला, बुनाई आदि सिखाकर उन्हें स्वावलंबी बनाया जाता था । सब अपना-अपना काम अपने हाथों से खुशी के साथ करते थे । वहाँ शिक्षक और छात्र एक-साथ रहते थे । गोपबंधु दास उनके मुखिया थे ।

एक दिन की बात है । काले-काले मेघ घुमड़ने लगे । रात भर झमाझम पानी बरसता रहा । रात के दो बजे के करीब किसी की सिसकने की आवाज सुनाई पड़ी । सब जग गये । वे शिक्षकों के कमरे के पास पहुँचे । देखा कि स्वयं गोपबन्धु रो रहे हैं । उन्होंने कहा- देखो, रात भर पानी बरसा है । नीचे वाले इलाकों में पानी भर गया होगा । नदियों में बाढ़ आ गयी होगी । लोगों के घरबार, खेत-क्यारियाँ

तहस–नहस हो गयी होंगी । सरकार उनकी सहायता तो नहीं करती । चलो, हम लोग गाँव–गाँव में जाएँ और लोगों को मदद पहुँचाएँ । गोपबन्धु का हृदय कितना कोमल था, यह उसकी एक मिसाल है ।

गोपबन्धु दास का जन्म पुरी जिले के सुआण्डो गाँव में सन् १८७७ ई में हुआ और देहांत सन् १९२८ ई में । लगभग ५० साल का छोटा सा जीवन । पर यह जीवन पूर्ण रूप से उत्कल के लिए समर्पित था । गोपबन्धु सर्वदा लोक–कल्याण, देश–प्रेम, समर्पित सेवा, सत्य–अहिंसा और नीति के पक्षधर रहे । वे ओड़िशा के दुख–दर्द, आशा–अभिलाषाओं को अंग्रेजों के सामने रखनेवाले एक निर्भीक नेता थे । धर्मपद और नचिकेता उनके आदर्श थे । वे भारतीय लोक सेवक मण्डल के सदस्य थे। वे 'समाज' नामक दैनिक समाचार पत्र के प्रकाशक भी थे। वे अनेक पुस्तकों के रचयिता थे।

वे सर्वदा कहते थे– मानव–जीवन की कसौटी तो उसके कर्म हैं । देश के लिए बलिदान देने से जीवन सार्थक होता है । वे बड़े स्वतंत्रता संग्रामी थे । कहते थे– स्वराज के पथ पर जितने गड्ढ़े हैं, वे सब मेरे अस्थि–मांस से पट जाएँ, मेरे देश–वासी मेरी पीठ पर चलकर प्रगति करें ।

गोपबन्धु उत्कल के जन–जन के प्रिय नेता थे, हर उत्कलीय के हृदय के मणि थे । वे सचमुच उत्कलमणि हैं ।

सौदामिनी मिश्र

शिक्षक के लिए

शिक्षक बाढ़ और सुनामी के समय होनेवाले नुकसान की ओर छात्रों का ध्यान आकर्षित करके इस समय उनकी सहायता करने की भावना जगाएँगे।

शिक्षक सत्यवादी वन विद्यालय और आज के विद्यालयों के पाठ्यक्रम की तुलना करके छात्रों के मन में हाथ के काम के प्रति रुचि बढ़ाएँगे।

शब्दार्थ : शब्द **अर्थ**

बेखबर	–	जिसे कुछ खबर या पता न हो
बेपरवाह	–	जिसे किसी की परवाह या चिंता न हो
स्वावलंबी	–	जो दूसरों की सहायता के बिना अपना काम खुद कर सकता हो।
सिसकना	–	रोना
इलाका	–	क्षेत्र
बाढ़	–	वन्या
तहस-नहस होना	–	नष्ट हो जाना
मदद	-	सहायता
मिसाल	-	उदाहरण

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) सत्यवादी वन-विद्यालय कहाँ बनाया गया था?

(ii) सिसकने की आवाज कहाँ सुनाई पड़ी?

(iii) गोपबंधु का जन्म कब हुआ था?

(iv) देशवासी मेरी पीठ पर चले जाएँ-यह किसने कहा था?

(v) हम उत्कलमणि के रूप में किसको जानते हैं?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) अंग्रेज भारतीयों को संतुष्ट क्यों नहीं कर पाते थे ?

(ii) वन–विद्यालय की स्थापना किन्होंने की ?

(iii) वन–विद्यालय में किस–किस विषय की शिक्षा दी जाती थी ?

(iv) गोपबन्धु क्यों रो रहे थे ?

(v) उन्होंने सबसे क्या कहा ?

(vi) वे किस प्रकार के नेता थे ?

(vii) वे सर्वदा क्या कहते थे ?

प्रश्न ३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–एक वाक्य में दीजिए ?

(i) हमारे देश पर किसका शासन था ?

(ii) वन विद्यालय के मुखिया कौन थे ?

(iii) गोपबन्धु का हृदय कैसा था ?

(iv) उनका जन्म कहाँ हुआ था ?

(v) गोपबन्धु किस किस के पक्षधर थे ?

प्रश्न ४. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से सही शब्द चुनकर खाली जगहें भरिए :

(सत्यवादी, १८७७, कर्म उत्कलमणि, अंग्रेज,)

(i) हमारे देश में ..... शासन करते थे ।

(ii) कुछ नवयुवकों ने ..... में सत्यवादी वन–विद्यालय बनाया था ।

(iii) गोपबन्धु का जन्म ..... ई. में हुआ था ।

(iv) मानव जीवन की कसौटी उसके ..... हैं ।

(v) गोपबन्धु सचमुच ..... हैं ।

भाषा-कार्य

प्रश्न ५. उदाहरण के अनुसार बदलिए :

बात	–	बातें	क्यारी	–	क्यारियाँ
मिसाल	–		नदी	–	
आवाज	–		लड़की	–	
रात	–		स्त्री	–	
कलम	–		गोली	–	

क्रिया के तीन काल होते हैं – भूत, वर्तमान और भविष्य ।

भूत – मैं गया । उसने खाया ।

वर्तमान– मैं जाता हूँ । वह खा रही है ।

भविष्य– तुम जाओगे । रमेश पढ़ेगा ।

प्रश्न ६. नीचे दिए गए वाक्यों के सही काल चुनिए :

(i) तब हमारे देश में अंग्रेज लोग शासन करते थे ।

(ii) गोपबन्धु रो रहे हैं ।

(iii) गोपबन्धु उनके मुखिया थे ।

(iv) मेरे देशवासी मेरी पीठ पर चलकर प्रगति करें ।

प्रश्न ७. उदाहरण के अनुसार वाक्यों का परिवर्तन कीजिए :

मूल वाक्य	परिवर्तित वाक्य
नवयुवकों ने विद्यालय बनाया।	नवयुवक विद्यालय बनाते हैं।
उन्होंने कहा।	.....
सरकार ने उनकी सहायता नहीं की।	.....
लड़की ने रोटी खाई।	.....
लोगों ने मदद पहुँचाई।	.....

आपके लिए काम

आप उत्कल के वरपुत्रों के चित्र संग्रह करके उन्हें अपने एलबम में चिपकाइए।

पं. गोपबंधु द्वारा रचित कोई कविता पठन कीजिए।

होली आई, होली आई

H9B82K

होली आई, होली आई
देखो तो यह क्या–क्या लाई ?
खेतों में लाई है सोना,
चमक उठा उनका हर कोना ।
सरसों फूली, गेहूँ लहका,
अमराई का आँगन महका ।।

हवा नई होकर लहराई,
होली आई, होली आई,
कोयल कुहकी, गूँजे भौंरे,
पत्ते झूमे चिकने कौरे ।
फूल गया टेसू जंगल में,
डूब गई दुनिया मंगल में ।।

सूरज चंदा सब सुखदाई,
होली आई, होली आई,
इस आँगन में मंजीरे खनके,
उस आँगन में नूपुर रनके ।
ढोलक ठनकी राह-राह में,
बालक, बूढ़े सब उछाह में ।।

गली-गली में ''फागें'' गाईं,
होली आई, होली आई,
जली ''होलिका'' चौराहों पर
लोग मिल रहे हैं राहों पर ।
जहाँ देखिए वहीं प्यार है,
रंग और रस की बहार है ।।

नाचो, गाओ, झूमो भाई,
होली आई, होली आई ।।

भवानी प्रसाद मिश्र

शिक्षक के लिए

शिक्षक छात्रों को विभिन्न त्योहारों और उनमें होने वाले क्रिया-कलापों के बारे में जानकारियाँ देंगे

शिक्षक छात्रों को हिरण्यकशिपु, होलिका और प्रहलाद संबंधी पौराणिक कथाएँ सुनाएँगे।

शब्दार्थ :

शब्द		अर्थ
चिकने	–	कोमल
फूली	–	खिल गयी
अमराई	–	आम का बाग
कौरे	–	नए
टेसू	–	पलाश
सुखदाई	–	सुख देनेवाले
मंजीरा	–	एक प्रकार का वाद्य यन्त्र
खनक	–	शब्द
नूपुर	–	पायल, घुँघरू
रनकना	–	पायल का बजना
राह	–	रास्ता
उछाह	–	उत्साह
होलिका	–	प्रह्लाद की बुआ
फाग	–	होली पर्व के समय गाया जाने वाला गीत

अनुशीलनी

१. निम्नलिखत प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) होली खेतों में क्या ले आती है ?

(ii) होली के समय किसका आँगन महकता है ?

(iii) इस समय दुनिया किसमें डूब जाती है ?

(iv) होली के समय गली-गली में क्या गाया जाता है ?

(v) होली के समय किनके मन में उत्साह भर जाता है ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(i) होली के समय कौन-कौन-सी फसलें उगायी जाती हैं ?

(ii) होली आने पर खेतों की शोभा कैसी होती है ?

(iii) दुनिया मंगल में कैसे डूब जाती है ?

(iv) होली आने पर कोयल और भौंरे क्या करते हैं ?

(v) होली के दिन लोग क्या करते हैं ?

प्रश्न ३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(i) इस समय कौन सुखदायी होता है ?

(ii) इस समय आँगन में क्या-क्या होता है ?

(iii) फागें कब गायी जाती हैं ?

(iv) होली में चौराहों पर क्या जलती है ?

(v) इस समय किसकी बहार आती है ?

प्रश्न ४. कविता पढ़कर रिक्त स्थानों को भरिए :

(i) खेतों में..... सोना ।

(ii) सरसों ....., गेहूँ..... ।

(iii) अमराई का आँगन ..... ।

(iv) ..... टेसू जंगल में ।

(v) जहाँ देखिए वहीं ..... है ।

(vi) ....., ..., ... भाई ।

प्रश्न ५. आओ जानें उस ऋतु का नाम क्या है ?

जिसमें कोयल कुहकती है ? .....

जिसमें बादल गरजते हैं ? .....

जिसमें ठंड लगती है ? .....

जिसमें लू चलती है ? .....

जिसमें रंग खेलते हैं ? .....

जिसमें चारों ओर हरियाली छा जाती है ? .....

भाषा–कार्य :

प्रश्न ६. आओ सीखें और लिखें

जैसे हवा का चलना, कोयल का कुहकना, सरसों का फूलना

पानी का ....., कुत्ते का ....., गेहूँ का .....

बादल का ....., गाय का ....., पत्तों का .....

बिजली का .....,शेर का ....., टेसू का .....

जैसे–मंजीरे का खनकना

वैसे–नूपुर का .....

ढोलक का .....

प्रश्न ७. समझें और लिखें

जैसे–खेतों में लाई है सोना – खेत में सोना लाई है ।

वैसे–पत्ते झूमे चिकने कौरे – .....

फूल गया टेसू जंगल में – .....

गूँजे भौंरे – .....

डूब गई दुनिया मंगल में – .....

ढोलक ठनकी राह–राह में –

इन वाक्यों को देखिए :

हर कोना चमक उठा ।

गेहूँ लहका ।

आँगन महका ।

पत्ते झूमे ।

टेसू फूल गया ।

रेखांकित शब्द पुंलिंग में हैं । इसलिए इनकी क्रियाएँ पुंलिंग में हैं ।

इन वाक्यों को देखिए :

होली आयी ।

सरसों फूली ।

हवा लहरायी ।

कोयल कुहकी ।

ढोलक ठनकी ।

ऊपर की सृज्ञाएँ स्त्री लिंग में हैं । इसलिए इनकी क्रियाएँ स्त्री लिंग में हैं ।

प्रश्न ८. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं । उनका लिंग पहचान कर उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

खेत, भौंरा, पत्ता, दुनिया, सूरज, चंदा, मंजीरा

आप के लिए काम :

ऋतुओं से संबंधित कुछ कविताएँ अपने साथियों को सुनाइए ।

बच्चों के रंग के खेल का एक चित्र बनाइए।

धागे का बंधन

कच्चा धागा टूट जाता है । बटा हुआ धागा भी झटक देने से टूट सकता है । लेकिन स्नेह का धागा आसानी से टूटता नहीं । भारत में राखी पूर्णिमा के दिन बहन भाई की कलाई में राखी बाँधती है । यह स्नेह का धागा तो कभी नहीं टूटता । बहन भाई के मुहँ में मिठाई भर देती है । भाई जान की बाजी लगाकर बहन की हर तरह से रक्षा करता है । भाई बहन के प्यार की एक ऐसी मशहूर ऐतिहासिक घटना है । यह किसी कहानी से कम नहीं ।

मेवाड़ राजस्थान का एक राज्य है । उसके अधिवासी बड़े वीर होते हैं । वे मरना जानते हैं, मगर हारना नहीं जानते । एक बार उस राज्य पर दुश्मन अहमद शाह ने हमला किया । राजा ने वीरगति पाई । कुछ दिन बाद अहमद शाह ने फिर धावा बोला । स्वयं महारानी कर्मवती अब लड़ाई के लिए तैयार हुईं । अपनी कमजोरी का खयाल करके उनके मन में एक विचार आया । क्यों न दिल्ली के बादशाह हुमायूँ को राखी भेजूँ । उन्होंने पहले हुमायूँ की उदारता की बहुत-सी कहानियाँ सुनी थीं । चटापट एक दूत के हाथ हुमायूँ के लिए राखी का तोहफा भेज दिया । हुमायूँ मुगल था, पर हिन्दुओं के रक्षा-बंधन का महत्व समझता था । महारानी की राखी देख कर वह खिल उठा । राखी के पीछे बहन के स्नेहभाव को वह ठीक-ठीक समझ गया । उसने दूत से कहा- ''सैनिक ! बहन कर्मवती से कहना कि उनकी राखी मिली । मैं बड़ा ही खुशकिस्मत हूँ । उन्होंने मुझे भाई माना । अब कहो, मेरी बहन का सब कुशल मंगल है न ?''

दूत ने मेवाड़ का सारा हाल बता दिया । हुमायूँ ने फौरन अपने सेनापति को सेना के साथ मेवाड़ के लिए कूच करने का हुक्म दिया । वह खुद कुछ अंगरक्षकों को लेकर तेज घोड़ों पर सवार हो मेवाड़ की ओर भागा । हुमायूँ मेवाड़ पहुँचने को उतावला हो रहा था । पर चितौड़ पहुँचने में उसे कई दिन लग गए ।

उधर मेवाड़ में लड़ाई खत्म हो रही थी । राजा तो पहले ही अपने साथियों के संग वीरगति को प्राप्त हो गये थे । रानी की सैन्यशक्ति कमजोर हो गई । अंत में राजस्थान की क्षात्र-परंपरा के अनुसार मेवाड़ की सभी नारियों ने कर्मवती के साथ मिलकर जौहर किया । धधकती आग की लपटों में रानी विलीन हो गईं ।

तब हुमायूँ वहाँ पहुँचा । उसके आने की खबर पाते ही दुश्मन नौ दो ग्यारह हो गए । बादशाह हुमायूँ की आँखों में आँसू भर आए । चिता के पास खड़े होकर उसने कहा– मेरी प्यारी बहन, मैं तुम्हारी रक्षा न कर सका । मैं कितना बदनसीब हूँ । लेकिन मैं तुम्हारे प्यार को अब ज्यादा महसूस करता हूँ । मैं कसम खाकर कहता हूँ कि अब मेवाड़ पर कोई भी आँख उठाकर नहीं देख सकता । अल्लाह हम दोनों को अगले जनम में जरूर मिलाये । खुदा हाफिज !

आज भी भारत में जो कोई इस घटना को याद करते हैं, उनकी आँखें तर हो जाती हैं । वे भाई और बहन के पाक़ रिश्तेकी दाद देते हैं ।

स्नेहलता दास

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पहले छात्रों से पूछेंगे कि वे राखी पूर्णिमा कैसे मनाते है। इसके बाद वे विभिन्न प्रांतों मे राखी पूर्णिमा कैसे मनाई जाती है उससे छात्रों को परिचित कराएँगे।

शब्दार्थ :

शब्द		अर्थ
धागा	–	सूत
आसानी	–	सरलता
कलई	–	हथेली के नीचे वाला हिस्सा
मशहूर	–	प्रसिद्ध
हमला	–	आक्रमण
बादशाह	–	सम्राट, राजा
तोहफा	–	उपहार
खिल उठा	–	प्रसन्न हुआ
खुश किस्मत	–	भाग्यशाली
हाल	–	अवस्था, समाचार
फौरन	–	तुरंत
कूच करना	–	युद्ध के लिए निकलना
उतावला	–	अस्थिर
वीरगति को प्राप्त होना	–	युद्ध में मृत्यु होना
जौहर करना	–	आग में कूदकर मर जाना
धधकती आग	–	जलती अग्नि
लपट	–	शिखा
नौ दो ग्यारह होना	–	भाग जाना
आँसू	–	अश्रु
बदनसीब	–	भाग्यहीन

महसूस करना	–	अनुभव करना
कसम खाना	–	प्रतिज्ञा करना
आँख उठाना	–	बुरी दृष्टि से देखना, हानि करने की चेष्टा करना
आँखें तर होना	–	रोना
पाक़	–	पवित्र
दाद देना	–	प्रशंसा करना
रिश्ता	–	संबंध

अनुशीलनी

प्रश्न १. निम्नलिखत प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) कौन-सा धागा स्नेह क धागा होता है ?
(ii) कौन जान की बाजी लगाकर बहन की रक्षा करता है ?
(iii) कौन हारना नहीं जानते ?
(iv) मेवाड़ की महारानी का नाम क्या था ?
(v) रानी ने किसके हाथ राखी भेजी ?
(vi) जौहर करना किसकी परंपरा है ?
(vii) 'मैं तुम्हारी रक्षा न कर सका।' यहाँ कौन किसकी रक्षा न कर सका ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) राखी पूर्णिमा के दिन भाई–बहन क्या करते हैं ?
(ii) अहमद शाह के पहले हमले का परिणाम क्या हुआ ?
(iii) अपनी कमजोरी का खयाल करके कर्मवती ने क्या किया ?
(iv) राखी मिलने पर हुमायूँ ने दूत से क्या कहा ?
(v) दूत से मेवाड़ का हाल सुनकर हूमायूँ ने क्या किया ?
(vi) सैन्यशक्ति को कमजोर देखकर कर्मवती ने क्या किया ?
(vii) हूमायूँ ने कसम खाकर क्या कहा ?

प्रश्न ३. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए :

(i) बटा हुआ धागा कैसे टूट सकता है ?

(ii) कौन सा धागा कभी नहीं टूटता ?

(iii) मेवाड़ किस राज्य में है ?

(iv) मेवाड़ के राणा की पत्नी का नाम क्या था ?

(v) हुमायूँ कहाँ के बादशाह थे ?

(vi) कर्मवती ने हुमायूँ के लिए क्या भेजा ?

(vii) हुमायूँ ने अपने सेनापति को क्या हुक्म दिया ?

(viii) हुमायूँ के आने की खबर पाकर दुश्मन ने क्या किया ?

प्रश्न ४. पाठ के आधार पर उपयुक्त शब्दों से शून्यस्थानों को भरिए :

(i) भाई बहन के लिए ..... लगाता है । (जान की बाजी, प्राणों का बलिदान)

(ii) हुमायूँ..... था । (तुर्क, मुगल)

(iii) दुश्मन ..... हो गए । (एक दो तीन, नौ दो ग्यारह)

(iv) ..... ने मेवाड़ पर हमला किया । (हुमायूँ, अहमद शाह, सतार खाँ)

प्रश्न ५. सही विकल्प चुनिए :

(क) भाई जान की बाजी लगाकर बहन की रक्षा करता है । क्योंकि-

(i) बहन बदले में उसे रुपये देती है ।

(ii) बहन भाई के हाथ में स्नेह से राखी बाँधती है ।

(iii) बहन से वह बहुत डरता है ।

(iv) यह न करने से लोग बुरा मानेंगे ।

(ख) कर्मवती हुमायूँ को राखी भेजती है। क्योंकि–

(i) कर्मवती बहन के रूप में हुमायूँ से सहायता चाहती है।

(ii) मुगल बादशाह हुमायूँ से कर्मवती डरती थी।

(iii) हुमायूँ को राखी के बारे में कुछ मालूम नहीं था।

(iv) बदले में कर्मवती हुमायूँ से मिठाई पाना चाहती थी।

(ग) मेवाड़ की सभी रानियों ने कर्मवती के साथ मिलकर जौहर किया, क्योंकि-

(i) कर्मवती को हुमायूँ ने सहयता नहीं की।

(ii) रानी की हार हो गयी थी।

(iii) कर्मवती अहमद शाह को डरा देना चाहती थी।

(iv) आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए यह राजस्थान की क्षात्र परंपरा है।

भाषा कार्य :

खिल उठना	-	प्रसत्र होना
कूच करना	-	युद्ध करने के लिए निकलना
वीरगति को प्राप्त होना	-	युद्ध में मृत्यु होना
नौ दो ग्यारह होना	-	भाग जाना
आँख उठाना	-	आक्रमण करना

इन्हें मुहावरा कहा जाता है।

प्रश्न ६. ऊपर लिखे मुहावरों के सही रूप लगाकर वाक्यों को पूरा कीजिए :

(i) मेवाड़ के राजा ..... ।

(ii) हुमायूँ राखी देखकर ..... ।

(iii) हुमायूँ ने मेवाड़ के लिए ..... ।

(iv) जो भी भारत की ओर ..... हम उसे नहीं छोड़ेंगे ।

(v) पुलिस के आते ही चोर ..... ।

प्रश्न ७. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

मूल वाक्य	परिवर्तित वाक्य
राजा वीरगति पाता है।	राजा ने वीरगति पाई।
वह दूर से कहता है।	.....
वह मुझे भाई मानती है।	.....
दुत हाल बता देता है।	.....
चिता के पास खड़े होकर वह कहता है	.....

प्रश्न ८. नीचे लिखे 'क' विभाग के विशेषणों साथ 'ख' विभाग के विशेष्यों (संज्ञाओं) का मिलान कीजिए :

(क)	(ख)
कमजोर	दिन
अपनी	बहन
पाक	कमजोरी
प्यारी	सैन्यशक्ति
कई	रिश्ते

९. कोष्ठक में दिए गए परसर्गों से खाली जगहें भरिए:

(ने, का, से, की, में)

(i) स्नेह का धागा आसानी..... टूटता नहीं।

(ii) बहन भाई के मुँह ..... मिठाई भर देती है।

(iii) मेवाड़ राजस्थान .....एक राज्य है।

(iv) राजा ..... वीरगति पाई।

(v) हम् इस घटना ..... याद करते हैं।

आपके लिए काम :

आप अपनी कथा के छात्र-छत्रओं से मिलकर न का बंधन एकोकी का मंचन कीजिए। आप अपने शिक्षक/शिक्षिका का सहयोग लेकर इस कहानी को नाट्य रूप देकर अभिनय कीजिए।

चूहों की चौकड़ी

H9TZ5V

बच्चों को कहीं से खबर मिल गई कि इस बार गर्मी की छुट्टियाँ जल्दी होंगी। फिर पता चला नये सत्र में नये अध्यापक आएँगे। उनका नाम भी किसी ने बता दिया – कालीकुमार तर्कालंकार।

आधी छुट्टी होने पर कुछ लड़के पेड़ों के झुरमुट में खड़े होकर बतियाने लगे। सभी लोग इस बात पर सहमत थे कि जो नए अध्यापक स्कूल में आनेवाले हैं, उनसे वे बिलकुल नहीं पढ़ेंगे, चाहे कुछ भी हो जाए।

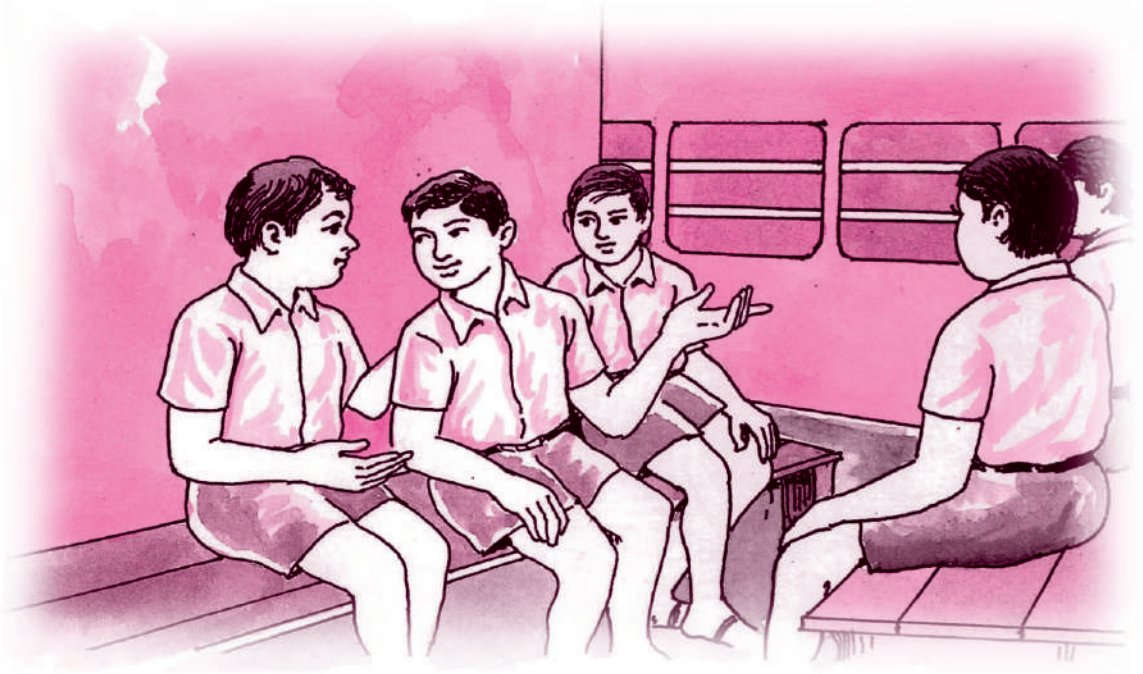

लड़के छुट्टियों में घर चले गए। मौज मस्ती में वक्त कट गया। स्कूल खुल गया तो लड़के फिर लौटने लगे। वे आकर रेलगाड़ी में बैठे। लड़कों के बीच एक लड़का था,चिकुन। वह मजाक करने के लिए कविता पढ़ने लगा।

– आई वर्षा रानी। छींटें पड़ीं मनमानी।।

बाकी लड़के ताली बजाकर हँसने लगे।

रेलगाड़ी एक छोटे–से स्टेशन पर रुकी। एक सज्जन गाड़ी में चढ़े। उनके पास छोटे-मोटे कई सामान थे। एक बिछौना, एक टीन का ट्रंक, एक पोटली और दो हंडियाँ, जिनके मुँह कपड़े से बन्द थे।

लड़कों में से एक ने उस सज्जन से कहा – 'बूढ़े बाबा! इस डिब्बे में जगह नहीं है, किसी दूसरे डिब्बे में जाओ न।'

उस आदमी ने प्यार से कहा – 'बड़ी भीड़ है। कहीं जगह नहीं है। मैं एक कोने में बैठ जाऊँगा'। ऐसा कहकर वे फर्श पर अपनी दरी बिछाकर बैठ गये।

एक लड़के ने पूछा – ''बाबा, आप कहाँ जा रहे हैं। बाबा कुछ जवाब देते, उससे पहले माधवन बोल उठा– 'अरे, श्राद्ध करने जा रहे होंगे।''

बाबा हैरानी से बोले – ''श्राद्ध! किसका श्राद्ध!'' उसी लड़के ने ही जवाब दे दिया – ''अरे, काले कुम्हड़े का श्राद्ध। नहीं, हरी मिर्च का श्राद्ध।''

चिकुन ने कविता पढ़ी –

हरी मिर्च और काला कुम्हड़ा, जो बैठा है, हो जाय खड़ा।

लड़के ताली बजाकर हँसने गाने लगे।

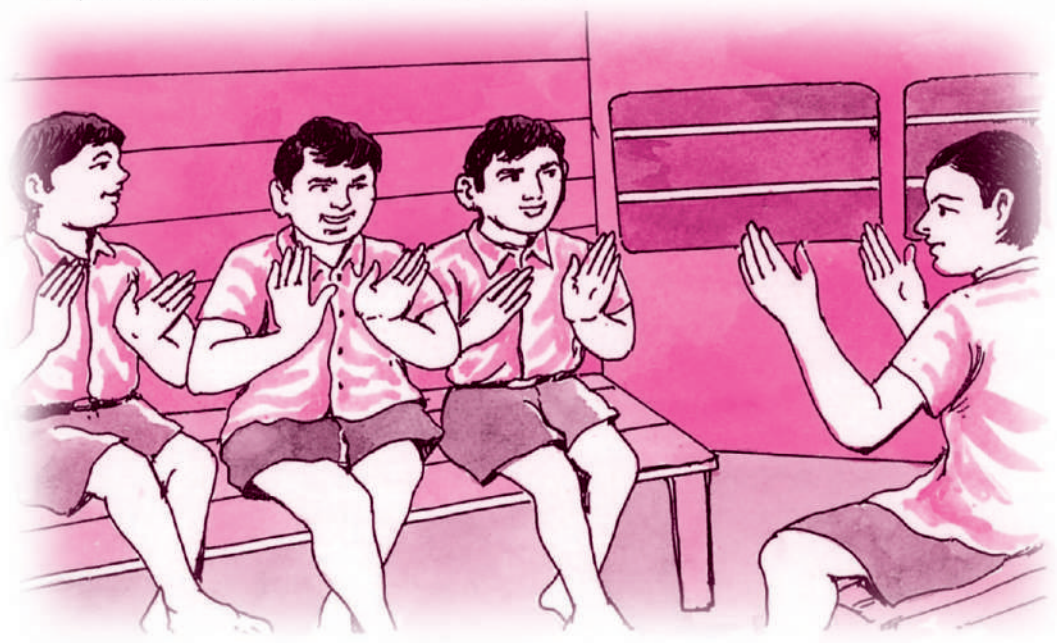

अगला स्टेशन था संबलपुर। सज्जन नीचे उतरे। दो नये सज्जन उनसे मिलने आए थे। वे बाहर खड़े बातचीत करने लगे। जब वापस डिब्बे में आए तो चिकुन ने चेतावनी देते हुए कहा –

''बाबा, देखिए – इस डिब्बे से उतर जाने में ही आपकी भलाई है।''

''ऐसा क्यों ?''

''यहाँ डिब्बे में चूहों का बड़ा कष्ट है।''

''चूहे ? क्या मतलब ?''

''देखिए न । चूहों ने आपकी हंडियों का क्या हाल कर रखा है।''

तब सज्जन ने देखा कि रसगुल्लों से भरी हंडियाँ खाली हैं। वे अपनी पोटली खोजने लगे। तब चिकुन बोला – ''बाबा, आपकी पोटली में न जाने क्या था, उसे तो चूहे उठाकर भाग खड़े हुए।'' सज्जन को याद आया कि उसमें तो उनके बगीचे

के कुछ पके रसीले आम बँधे हुए थे। सज्जन ने हँसकर कहा – ''लगता है चूहों को बड़ी भूख लगी थी।''

चिकुन बोला – ''चूहे तो बिना भूख के सब चट कर जाते हैं।''

और बच्चे क्यों पीछे रहते। सभी कहने लगे – ''हाँ हाँ,ऐसा ही है। कुछ और भी उन्हें मिलता तो भी चट कर जाते।''

सज्जन ने मुस्कराते हुए कहा – ''भारी भूल हो गई। मुझेअगर मालूम होता कि गाड़ी चूहों से भरी पड़ी है, तो मैं उनके लिए कुछ और ले आता।'' सज्जन को मुस्कराते देख बच्चे झेंप कर चुप हो गये। मन में सोचने लगे – ''ये नाराज हो जाते तो मजा आता।''

अगला स्टेशन आ गया अनगुल। तब सज्जन बोले – ''ठीक है। अब मैं इस डिब्बे से निकलकर दूसरे में चला जाता हूँ। तुम लोग मौजमस्ती करो। तुम्हें अब कष्ट नहीं दूँगा।''

लड़कों ने फौरन कहा – ''नहीं, नहीं बाबा ! हमें क्या कष्ट है। आप बैठिए न। हमारे साथ आप इसी डिब्बे में चलिए। हम सब आपके सामानों का चौकसी से पहरा देंगे। चूहे कुछ नहीं कर पाएँगे।''

अभी डिब्बे के सामने एक ठेला आ गया। ठेलेवाला चिल्ला रहा था – ''गर्म गर्म समोसे।'' बाबा ने उसे पास बुलाया। लड़कों से बोले–देखें, चूहे समोसे खाते हैं कि नहीं। ठेलेवाले से कहा– ''हर बच्चे को दो–दो समोसे दो।'' लड़के बड़े खुश हुए। सब खुशी से समोसे खाने लगे।

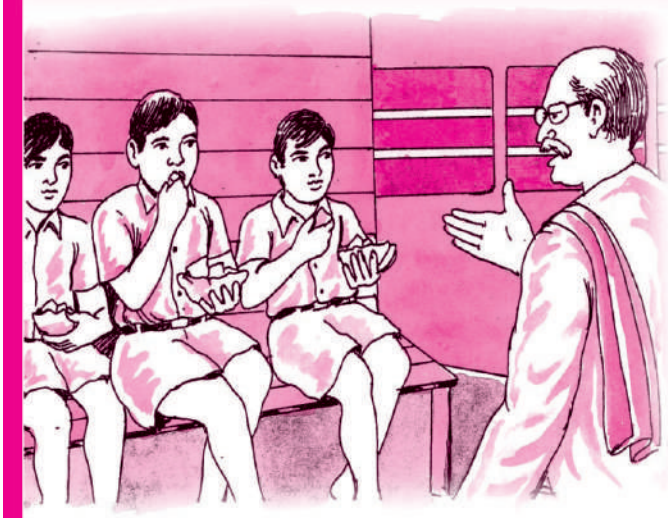

समोसे खाते-खाते लड़कों ने पूछा - "बाबा, आप कहाँ जा रहे हैं?"

"मैं रोजगार की तलाश में निकला हूँ। जहाँ काम मिलेगा वहीं उतर पड़ूँगा।" बूढ़े सज्जन ने कहा। लडकों ने फिर पूछा - "आप क्या काम जानते हैं?"

सज्जन ने बताया - "मैं शिक्षक हूँ। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, जैसी बहुत-सी भाषाएँ जानता हूँ।"

लड़के बड़े खुश हुए। एक लड़के ने उछल कर कहा - "फिर तो आपको कहीं जाने की जरूरत नहीं। आप हमारे स्कूल में आकर पढ़ाइए। हमारे यहाँ भाषा सिखानेवाले की बड़ी जरूरत है।"

"अरे, तुम्हारे स्कूलवाले भला मुझे क्यों रखेंगे?"

"रखेंगे कैसे नहीं? हम अपने स्कूल में किसी ऐरे-गैरे को आने ही नहीं देंगे।"

"अगर तुम्हारे स्कूल के अधिकारी मुझे पसंद न करें तो?"

"पसंद न करने का सवाल नहीं उठता। हमारे अधिकारी अच्छे-अच्छे अध्यापक ढूँढ़ लाते हैं। आप हमारे साथ चलिए। पसंद नहीं करेंगे तो हम स्कूल छोड़ देंगे।" बच्चों की जिद देख सज्जन ने कहा-"अच्छा बाबा, तो तुम्हीं मुझे ले चलो।"

इतने में गाड़ी स्टेशन पर आकर रुकी। वहाँ स्कूल के सेक्रेटरी बाबू पहले ही खड़े थे। बूढ़े सज्जन को देखते ही वे उनके पास आ गये। उन्हें प्रणाम किया। बोले

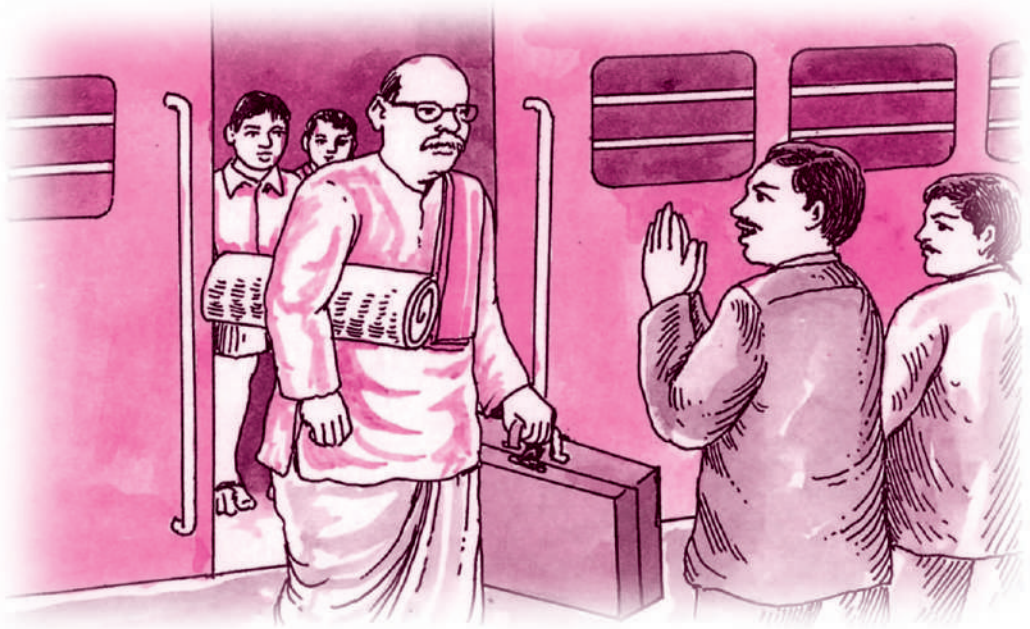

– "आइए तर्कालंकार महाशय। हम सब खुश हैं कि आप आ गए। चलिए आपके रहने का सब इंतजाम हो गया है।" लड़के एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर
की कहानी के आधार पर

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पहले छात्रों से पूछकर यह पता कर लेंगे कि वे अपने घर पर बूढ़े दादा और बूढ़ी दादी के प्रति कैसा व्यवहर करते हैं और दादा-दादी उन्हें कैसा प्यार करते हैं।

शिक्षक छात्रों को समझा देंगे कि घर हो या बाहर, हम बूढ़ों का आदर करें, कभी भी उनका उपहास न करें।

शब्दार्थ :

चौकड़ी	-	उपद्रवी लोगों का समूह
झुरमुट	-	समूह
बतियाना	-	बात करना
सहमत	-	राजी
बिछौना	-	बिस्तर
श्राद्ध	-	पितरों की पूजा
चेतावनी	-	खतरे के पूर्व की सूचना
रसीले	-	रसदार
तलाश	-	खोज
इंतजार	-	प्रतीक्षा
इंतजाम	-	व्यवस्था

अनुशीलनी

प्रश्न १. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) बच्चों को क्या खबर मिल गई ?

(ii) नए अध्यापक का नाम क्या था ?

(iii) छुट्टियों के बाद लड़के घर से कैसे लौटे ?

(iv) हंडियों के मुँह कैसे बंद थे ?

(v) हंडियों मे क्या था ?

(vi) हर बच्चे को कितने-कितने समोसे दिए गए ?

(vii) शिक्षक कौन-कौन सी भाषाएँ जानते थे ?

(viii) बूढ़े सज्जन को किसने प्रणाम किया ?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

(i) सभी लड़के किस बात पर सहमत थे ?

(ii) लड़कों ने बूढ़े सज्जन से क्या कहा ?

(iii) चिकुन ने सज्जन को क्या सलाह दी ?

(iv) चूहों के उत्पात से बूढ़े सज्जन की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

(v) लड़कों ने क्या जिद की ?

(vi) बूढ़े सज्जन कौन थे ?

(vii) तुम्हें कौन-से अध्यापक अच्छे लगते हैं ?

प्रश्न ३. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(i) कौन मजाक करने के लिए कविता पढ़ने लगा ?

(ii) किस स्टेशन पर ठेला आया ?

(iii) कौन बोल उठा कि बाब श्राद्ध करने जा रहे हैं ?

(iv) किस स्टेशन पर सज्जन नीचे उतरे थे ?

(v) किसकी कहानी के आधार पर यह कहानी लिखी गई है ?

भाषा कार्य :

प्रश्न ४. 'नये अधयापक' में 'नये' शब्द अध्यापक की विशेषता है। ऐसे विशेषता बताने बाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं। जिसकी विशेषता बताई जाए वह शब्द 'संज्ञा' है। आप इस पाठ में से विशेषणों और उनके संज्ञा-शब्दों को चुन कर लिखिए :

जैसे – विशेषण – संज्ञा, आधी – छुट्टी

प्रश्न५.

मस्त + ई = मस्ती,
हैरान + ई = हैरानी
ऐसे अन्य शब्द बनाइए।

प्रश्न ६. कोष्ठक में से सही शब्द चुनकर खाली जगहें भरिए :

(पीछे, के बीच, कहीं, के पास, के सामने)

उन लड़कों ----- एक लड़का था चिकुन।

उन ------ छोटे मोटे कुछ सामान थे।

बच्चे क्यों --- रहते।

डिब्बे ----- एक ठेला आ गया।

आपको ------जाने की जरूरत नहीं।

प्रश्न ७. युग्म शब्द छाँटिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

जैसे - मौज मस्ती

प्रश्न ८. कठिन शब्दों को फिर से लिखिए-

छुट्टी, अध्यापक, स्कूल, हंडियाँ, ट्रंक, स्टेशन, संस्कृत, कुम्हड़ा, श्राद्ध, सेक्रेटरी

प्रश्न९. का, के या की से खाली स्थान भरिए :

गर्मी.....छुट्टियाँ हंडियों ..... हाल

उन ..... नाम आप ..... भलाई

पेडों ..... झुरमुट　　रोजगार ..... तलाश

किस ..... श्राद्ध　　पसंद करने ..... सवाल

दूसरे ..... मुँह　　रहने ..... इंतजाम

प्रश्न १०. नीचे 'क' विभाग में कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके विपरीतार्थक शब्द 'ख' विभाग में हैं, उन्हें जोडिए :

(क) अगला, खाली, गर्म, हरी, भलाई, बड़ा, सज्जन, गर्मी, हँसना, बंद होना, बंद, चढ़ना, जवाब, पास, बूढा, पसंद, अच्छा

(ख) नापसंद, बालक, दूर, पूरा, पिछला, ठंड, पकी, छोटा, दुर्जन, सवाल, उतरना, खुला, बुराई, बुरा, रोना, सर्दी, खुलना,

आपके लिए काम

आप शिक्षक दिवस में भाषण देने के लिए एक लेखा तैयार कीजिए और उसे अपने मित्रों को सुनाइए। कर्ण, उपमन्यु, आरुणि और एकलव्य आदि शिष्यों की गुरुभक्ति संबधी चित्र बनाइए और उन्हें अपने अध्ययन-कक्ष में टाँगकर रखिए।

क्या आप जानते हैं ?

१. कर्ता + ने

भूतकाल की क्रिया सकर्मक हो, तो कर्ता के साथ 'ने' आता है; जैसे-

रीना ने आम खाया ।

राम ने रोटी खायी ।

२. ध्यान दें

यहाँ कर्ता के साथ 'ने' है।

क्रिया कर्ता के अनुसार नहीं बदलती ।

क्रिया कर्म के लिंग और वचन को अपनाती है।

जैसे –

राम ने एक आम खाया।

सीता ने चार आम खाए।

राम ने एक रोटी खाई।

सीता ने चार रोटियाँ खाईं।

ऐसे वाक्य बनाएँ। कर्म के लिंग वचन बदल जाए तो क्रिया भी बदल जाएगी।

(शिक्षक इस कार्य में सहायता करें। अनेक उदाहरण देकर थोड़ा अभ्यास करा दें)

३. सर्वनाम + ने

मैं – मैंने, तू – तूने

हम – हमने, तुम – तुमने

लेकिन : वह – उसने, वे – उन्होंने।

बना दो मधुर मेरा जीवन

HA3V7I

बना दो ऐसा मेरा जीवन ।
कि मातृभूमि हेतु बेहिचक
कर दूँ तन मन धन अर्पण ।
बन सुमन सुरभि मधुरस
शुचि सरल छलहीन सरस
बितरूँ जन–जन में अमृत कण !

बना दो ऐसा मेरा मन ।
जग के सुख दुःख का दर्पण ।
पोंछ जन–जन के नयनों के
अश्रु कण करूँ मरण वरण ।
प्रभो बनाओ ऐसा मेरा तन
कि अपनी फौलादी बाँहों से
अप्रतिहत, अविचल गति से
कर सकूँ सदा अन्याय – दमन ।

देना रसना में मधुर वचन!
हृत्तन्त्री की तान से मेरी
अकर्ण विषधर हो जाय नतफन ।
बना दो मधुर यह जीवन ।
प्रेम, परहित, सेवा से मेरी
धरती बन जाय स्वर्ग – भुवन ।

राधाकान्त मिश्र

शिक्षक के लिए :

शिक्षक पहले छात्रों को इस प्रार्थना की समान भाव वाली कविता सुनाकर उनके मन में अच्छे गुणों की भावना भर देंगे।

शिक्षक छात्रों को ऐसी कविताओं के उदाहरण देंगे जिनके पात्र अपने त्याग और बलिदान से महान बन गए हों। छात्र ऐसे उदाहरणों से प्रेरित होकर अपने चरित्र को सुधारने में ध्यान देंगे।

शब्दार्थ

हेतु	–	के लिए
बेहिचक	–	बे + हिचक, बिना संकोच के
सुमन	–	फूल
सुरभि	–	सुगंध
मधुरस	–	शहद, मधु
शुचि	–	पवित्र
फौलादी	–	फौलाद से बना, इस्पात का
अप्रतिहत	–	अ + प्रतिहत, अबाध
अविचल	–	अ + विचल, अटल
रसना	–	जीभ
हृत्तन्त्री	–	हृत् + तंत्री, हृदय के तार, स्नेहभरी बातें
तान	–	राग, विचार
अकर्ण	–	अ + कर्ण, बिना कान वाले, जो दूसरों की बात न सुने।
विषधर	–	साँप, दुष्टजन
नतफन	–	जिस साँप का फन नीचे झुक गया हो
परहित	–	परोपकार

भावबोध:

बन..... अमृत-कण= मैं फूल जैसा कोमल और सुंन्दर बन सबको खुश कर दूँ। सुगंध का मधु बन सबको अमृत का स्वाद चखाऊँ।

जग.....दर्पण= संसार के सुख से सुखी और दुःख से मैं दुःखी बनूँ। सबके साथ सहानुभूति रखूँ।

हृत्तंत्री की..... नतफन= मैं अपनी स्नेहभरी बातों से, प्यार से किसीकी न सुनने वाले दुष्ट व्यक्ति को भी विनम्र बना दूँ।

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए :

(i) कवि किसके लिए तन-मन-धन अर्पण करना चाहते हैं?
(ii) कवि जन-जन में क्या वितरण करना चाहते हैं?
(iii) कवि प्रभु से किसे सुख-दुख का दर्पण बनाने की प्रार्थना करते हैं?
(iv) कवि मरण का वरण करने से पहले क्या करना चाहते हैं?
(v) कवि ने किसे अकर्ण कहा है?
(vi) इस कविता के कवि कौन हैं?

प्रश्न२. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(i) कवि मातृभूमि हेतु क्या करना चाहते हैं?
(ii) कवि अपने मन को क्या बनाना चाहते हैं?
(iii) कवि कब मरण-वरण करना चाहते हैं?
(iv) कवि अपनी फौलादी बाँहों से क्या करना चाहते हैं?
(v) कवि अपनी रसना के लिए क्या चाहते हैं?
(vi) कवि की हृत्तंत्री की तान से क्या हो जाएगा?
(vii) यह धरती कैसे स्वर्ग-भुवन बन जाएगी?

प्रश्न ३. पाठ के आधार पर शून्यस्थानों को भरिए :

बना दो ऐसा --------

-----हेतु -------कर दूँ-----अर्पण

-----गति से ।कर सकूँ सदा ------।

प्रश्न ४. समझिए और लिखिए ।

मातृभूमि, अर्पण, सरस, अमृत, मेरा, दर्पण, अश्रु, मरण-वरण, अप्रतिहत, रसना, मधुर, हृत्तंत्री, प्रेम, धरती, स्वर्ग।

भाषा-कार्य :

एक ही अर्थ वाले अनेक शब्द होते हैं। ये पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

जैसे- सुमन के पर्यायवाची शब्द हैं : फूल, पुष्प, कुसुम।

प्रश्न५.नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले पर्यायवाची शब्द लिखिए:

पवित्र रसना विषधर शुचि परहित सुरभि

प्रश्न६. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। लिखिए:

मातृ + भूमि = मातृभूमि छल + हीन = छलहीन

अश्रु + कण = अश्रुकण हृत् + तंत्री = हृत्तंत्री

स्वर्ग + भुवन = स्वर्गभुवन

इस प्रकार के पाँच शब्द सोचकर लिखिए।

प्रश्न७. विलोम शब्द लिखिए:

सरल, छलहीन, मधुर, अन्याय, हित

आपके लिए काम :

इस कविता को कंठस्थ करके कक्षा में सुनाइए।

इस प्रकार की भाववाली कविताओं का संग्रह करके अपनी कॉपी में लिखिए और दूसरों को सुनाइए।

जंगल रो रहा है

शशांक बाबू चमेली गाँव के मूल निवासी हैं । मगर लगभग चालीस सालों से शहर में रहते हैं। सरकारी नौकरी करते हैं। एक दिन उनके बचपन के साथी रमेश बाबू उनेक घर पर आए। बोले – ''यार, शशांक! तुम तो बेगाने हो गए। जब से गाँव छोड़ा, मुँह फेरकर देखा तक नहीं। चलो, अपनी पुश्तैनी जगह तो देख लो।''

दोनों साथी खुशी-खुशी गाँव के लिए चल पड़े। बस रुकी। नीचे उतरे। शशांक ने चारों तरफ नजर दौड़ाई। अचम्भा हुए। बोले – ''रमेश, हमारा गाँव कहाँ है ? सड़क के किनारे आम के सैकड़ों पेड़ कहाँ हैं। पास की पहाड़ी साँवली भी नहीं दिखती। पहाड़ी की तलहटी से गाँव के छोर तक फैले वे हरेभरे सुहावने जंगल कहाँ हैं। किस रेगिस्तान में लाकर पटक दिया ? कहाँ जाना है तुमको ?''

''अपना गाँव भी नहीं पहचानते। पाँच सौ कदम आगे ही तो अपनी चमेली है। हाँ, आम के पेड़ों का अब नामोनिशान नहीं है। पहले शाल, सागौन जैसे जंगल कट गये। फिर आम, जामुन भी नहीं रहे। लोगों को लकड़ी की जरूरत थी। मकान के चौखट – दरवाजे, किवाड़ – खिड़कियाँ, मेज-कुर्सियाँ बनते बनते सब लकड़ी तबाह हो गई। जंगल सफाचट हो गये हैं। तुमने ठीक ही कहा। अब हम रेगिस्तान ही में रहते हैं।''

''हाँ, अखबारों में बराबर खबरें छपती हैं कि जंगल साफ हो गये हैं। धरती का उत्ताप बढ़ रहा है। गर्मी की वजह से तो शहर में रहना मुश्किल हो गया है। फरवरी से कूलर, ए.सी. चलने लगते हैं। लेकिन दूर से ये अजीब सी आवाज क्या है ? कभी सन-सनन् झन्-झनन् तो कभी खाँव-खाँव। सन्नाटे की मायूशी सो अलग।'' शशांक ने पूछा।

रमेश बोले – ''ये आवाजें उस पहाड़ की तरफ से आती हैं। पेड़ – पौधे न रहे। कुछ झाड़ – झंखाड़ ही तो बचे हैं। उनकी सूखी डंठलें, सूखे–कच्चे पत्ते आपस में टकराते हैं तो ऐसी अजीबो-गरीब आवाज पैदा होती है। मानो जंगल सिसक रहा हो। हिचकियाँ लेता हो। रो रहा हो।''

''पेड़ लगाते क्यों नहीं ?'' शशांक ने उतावली से पूछा। ''मालूम है, सरकार पेड़ लगवाने के लिए करोड़ों रुपये खर्च करती है।''

''लेकिन लोगों की योजना अपने ढंग से चलती है। पौधे लगा दिये जाते हैं, सिंचाई नहीं होती। सूख जाते हैं। जो थोड़े से भाग्यशाली तने मुट्ठी भर के होते हैं तो काट लिए जाते हैं। इस हाथ दो उस हाथ लो।'' रमेश ने समझाया।

''तब तो ये खबरें सही हैं कि जंगलों की भारी कटाई से पेड़–पौधे सब साफ हो गये हैं। ताप बढ़ रहा है। मौसम मनमाना करता है। ठीक से बारिश नहीं होती। इसमें खेती क्या खाक होगी। हिमालय की बर्फ पिघल रही है। समुद्र का पानी बढ़ रहा है। हमारा गाँव ही नहीं; सारा देश खतरे में है।''शशांक ने कहा।

तभी गाँव के दूसरे छोर से कुछ हल्ला हुआ। रमेश ने बताया कि जंगल न रहने से जंगली जानवर; खासकर हाथियों का झुण्ड गाँवों में घुस आता है। जंगल में पेट नहीं भरता तो क्या करें। उनको भगाने के लिए लोग शोरगुल करते हैं। वनवासी लोग कष्ट में हैं। वनजात द्रव्य नहीं मिलते। शेर, बाघ, भालू, सियार, जैसे जानवरों की संख्या भी एकदम कम हो गई है। चिड़ियों की कई नस्लें तो खत्म हो चुकी हैं।

दोनों ने सोचा – जंगल को बचाना होगा। पेड़ ही जीवन है। जंगल बचाओ तो दुनिया बचेगी। जंगल अपना दुखड़ा नहीं रोता। मानव के लिए रोता है। प्राणीजगत के लिए रोता है। सही कहा गया है– जंगल में ही मंगल है। पर कौन सुनता है ? हमारी बातें अरण्यरोदन न बन जाएँ। जंगल में घुसो मत। वह अपने आप हराभरा हो जाएगा।

रवीन्द्रनाथ मिश्र

शिक्षक के लिए:

जंगल की कटाई से प्रकृति में असंतुलन उत्पन्न होता है और हमें प्राकृतिक आपदाएँ झेलनी पड़ती हैं। छात्रों को इस सत्य से परिचित कराने के लिए शिक्षक पहले की जंगल-स्थिति और आज की जंगल-स्थिति का एक तुलनात्मक चित्र प्रस्तुत करेंगे ताकि 'पेड़ लगाओ-देश बचाओ' के नारे को वे अपने जीवन में कार्य का रूप देने को प्रवृत्त हों।

शब्दार्थ :

बेगाना	–	पराया
पुश्तैनी	–	बापदादे की
अचम्भा	–	अचरज
तलहटी	–	पहाड़ के नीचे की जमीन

छोर	–	सीमा
सुहावना	–	सुखद
रेगिस्तान	–	मरुभूमि
नामोनिशान	–	अस्तित्व का चिह्न
मायूशी	–	निराशा
डंठल	–	पतली डाली
मनमाना	–	स्वेच्छा
खतरा	–	विपत्ति
नस्ल	–	जाति
अरण्यरोदन	–	पहले घने जंगल होते थे। वहाँ कोई रोता तो दूसरा सुन भी नहीं पाता था। मतलब बेकार का रोना। अब अरण्य का रोदन कोई नहीं सुनता।

अनुशीलनी

प्रश्न१. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए:

(i) शशांक बाबू किस गाँव के निवासी हैं?

(ii) शशांक बाबू कितने सालों से शहर में रहते हैं?

(iii) शशांक बाबू के मित्र का नाम क्या था?

(iv) सड़क के किनारे पहले कौन-से पेड़ थे?

(v) पहाड़ पहले कैसी थी?

(vi) जंगल साफ हो जाने से धरती का क्या बढ़ रहा है?

(vii) सूखे कच्चे पत्ते आपस में टकराने से क्या लगता है?

(viii) ताप वढ़ने का कारण क्या है?

प्रश्न २. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(i) शशांक बाबू को क्यों अचम्भा हुआ ?

(ii) रेगिस्तान का क्या मतलब है ?

(iii) रमेश ने जंगल की क्या दशा बताई ?

(iv) जंगल कटने से क्या नतीजा हुआ ?

(v) अखबारों में क्या-क्या खबरें छपती हैं ?

(vi) पौधे लगाने पर भी जंगल क्यों नहीं पनपता ?

(vii) जंगल बचाने के लिएअब हमें क्या करना चाहिए ?

प्रश्न३. सही विकल्प चुनिए:

(क) हिमालय की बर्फ पिघल रही है। क्योंकि :

(i) दोपहर को सूरज की किरणें गर्म हो जाती हैं।

(ii) जंगल में आग लग जाती है।

(iii) विश्व का ताप बढ़ रहा है।

(ख) हाथियों का झुण्ड गाँवों में घुस आता है। क्योंकि :

(i) लोग हाथियों का आदर करते हैं।

(ii) जंगल में चारे लगाए जाते हैं।

(iii) जंगल अब कट गए हैं।

(ग) दुनिया बचेगी, यदि :

(i) हम जंगल की रक्षा करेंगे।

(ii) हम जंगल काट देंगे।

(iii) शहर में बडे-बडे कारखाने चलाए जाएँगे।

भाषा कार्य

इनका अभ्यास कीजिए

एकवचन		बहुवचन	एकवचन		बहुवचन
कुर्सी	-	कुर्सियाँ	अखबार	-	अखवार
नौकरी	-	नौकरियाँ	बाघ	-	बाघ
खिड़की	-	खिड़कियाँ	सियार	-	सियार
तलहटी	-	तलहटियाँ	शेर	-	शेर
पहाडी	-	पहाड़ियाँ	जंगल	-	जंगल
मुट्ठी	-	मुट्ठियाँ	पेड़	-	पेड़
हिचकी	-	हिचकियाँ	हाथी	-	हाथी
एकवचन		**बहुवचन**	**एकवचन**		**बहुवचन**
डंठल	-	डंठलें	पत्ता	-	पते
बात	-	बातें	खतरा-	-	खतरे
मेज	-	मेजें	तना	-	तने
नजर	-	नजरें	पौधा	-	पौधे
खबर	-	खबरें	कच्चा	-	कच्चे
आवाज	-	आवाजें	दरवाजा	-	दरवाजे
सड़क	-	सड़कें	कमरा	-	कमरे

प्रश्न ४. नीचे लिखे शब्दों के विशेषण पाठ से छाँटिए।

---------- पेड़,------- जंगल, ------ आवाज,

--------तने, ------- लोग ------ द्रव्य

प्रश्न ५. इन शब्दों को देखिए, और ऐसे दस शब्द लिखिए :

खुशी - खुशी

हरे - भरे

नामो - निशान

मेज - कुर्सी

प्रश्न ६. ऐसे पाँच शब्द बनाइए :

जैसे–बे + गाने, बे + रोजगार

प्रश्न ७. इनके पर्यायवाची शब्द लिखिए :

साथी, ताप, झुण्ड, कष्ट, संख्या, दुनिया, जंगल (ऐसे कुछ अन्य शब्दों को भी छाँटिए, और उनके समानार्थी शब्द जानिए।)

प्रश्न ८. निम्नलिखित शब्द बहुवचन में आए हैं। इनके एक वचन के रूप लिखिए :

सुहावने, खिड़कियाँ, आवाजें, कुर्सियाँ, पत्ते, सूखे, खबरें, किनारे, खतरे, पौधे।

प्रश्न ९. कोष्ठक में दिए गए उपयुक्त विभक्ति चिह्नों से खाली जगहें भरिए : (से, में, के, ने, का)

(i) शशांक बाबू चमेली गाँव ----- मूल निवासी हैं।

(ii) मगर वे लगभग चालीस सालों ---- शहर में रहते हैं।

(iii) आम के पेड़ों --------अब नामोनिशान नहीं है।

(iv) अखबारों --- बराबर खबरें छपती हैं।

(v) दोनों ----- सोचा।

प्रश्न १०. 'क' स्तंभ के शब्दों के साथ 'ख' स्तंभ के सही विपरीतार्थक या विलोम शब्दों का मिलान कीजिए :

'क'	'ख'
नीचे	विदेश
रोना	दानव
देश	ऊपर
मानव	गीला
सूखा	हँसना

नीचे लिखे शब्दों के रूप देखिए :

बचपन	=	बच्चा + पन			
अकेलापन	=	अकेला + पन			
कालापन	=	काला + पन			
गर्मी	=	गर्म + ई	गुरुत्व	=	गुरु + त्व
दूरी	=	दूर + ई	मनुष्यता	=	मनुष्य + ता
खुशी	=	खुश + ई	साधुता	=	साधु + ता
कटाई	=	कट + आई			
पढ़ाई	=	पढ़ + आई			
सिंचाई	=	सींच + आई			
मिलावट	=	मिल + आवट			
लिखावट	=	लिख + आवट			
बनावट	=	बन + आवट			
वीरत्व	=	वीर + त्व			
सतीत्व	=	सती + त्व			

इन शब्दों के अंत में जो अंश जोड़े गए हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। इनको जोड़ने से जो शब्द बने हैं, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

नीचे लिखी गई भाववाचक संज्ञाओं के प्रत्ययों को अलग कीजिए :

स्वच्छता, अकेलापन, स्त्रीत्व, लड़कपन, सनसनाहट, बंधुत्व, गरीबी, सुन्दरता, दिखावट,लड़ाई।

आपके लिए काम

आप कुछ तरकीबें सोचें जिससे जंगल का दु:ख कम हो। पेड़ न काटे जाएँ। हरियाली से सभी सुखी हों। क्या पेड़ लगाएँ ? क्या जंगल की सुरक्षा करें ?

इस पर कक्षा में शिक्षक का सहयोग लेकर एक भाषण-प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

सोचकर बताइए :

(i) हर विद्यार्थी को पेड़ काटने से कैसा लगता है, वह कक्षा में खड़ा होकर सबको बताए।

(ii) हाथियों का झुण्ड बस्ती में क्यों आता है ?

(iii) आजकल बाघ और हाथियों की सुरक्षा करने के क्या-क्या उपाय किए गए हैं ?

(iv) पहले शाम और भोर में सियार बोलते थे। आजकल उनकी आवाज क्यों नहीं सुनाई देती ?

(v) जंगल के बारे में अखबारों में क्या-क्या खबरें छपती हैं ?

वाद-विवाद

एक दिन स्कूल में यह विवाद छिड़ गया कि गाँव अच्छे हैं या शहर । गाँव के रहनेवालों ने गाँव का पक्ष लिया तो शहर वासियों ने शहर का । गुरुजी ने कहा- अच्छा, एक दिन किसी गाँव में चलकर देखेंगे ।

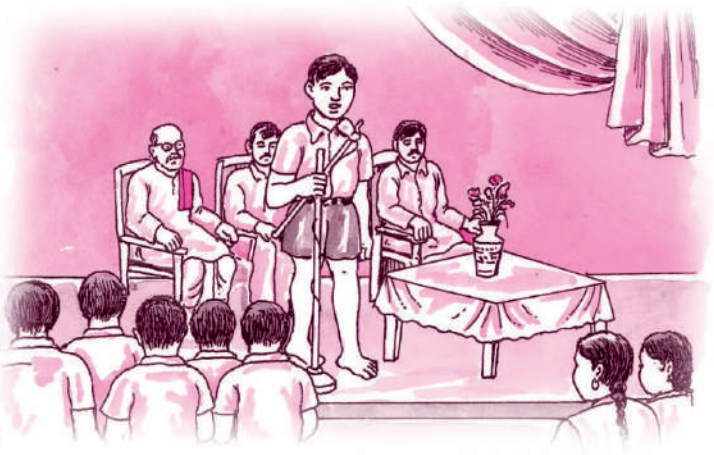

एक दिन कुछ छात्र-छात्राएँ एक गाँव में गए । वहाँ के पेड़-पौधे, खेती-बारी, साफ मुक्त हवा से सभी खुश हुए-

फिर उन लोगों ने देखा कि गाँव के घर-आँगन उतने साफ-सुथरे नहीं हैं । मवेशी खाने, मुर्गी के दरबे गंदे हैं । लोग जिस तालाब में नहाते हैं, वहीं कपड़े धोते हैं, मवेशियों को नहलाते हैं।

न कोई अस्पताल न कोई बाजार, न बिजली । जो भी है, सब नाकाफी। लोगों के बीच पहले जैसा भाईचारा भी नहीं रहा । यह जरूरी है कि गाँव का सरल, साफ, प्यारभरा माहौल बनाए रखा जाए ।

गुरुजी ने कहा-गाँव तो बहुत अच्छे हैं, पर यहाँ के माहौल को बदलना पड़ेगा। इसे अधिक साफ-सुथरा, स्वस्थ बनाना होगा । रास्ते बनाने होंगे । बिजली, टेलीफोन, डाकखाने, अस्पताल आदि का इंतजाम करना होगा ।

फिर एक दिन सब लोग शहर घूमने गए।

वापस आए तो कई छात्र-छात्राओं ने ऐसे विचार व्यक्त किए- शहर के ये बड़े-बड़े मकान, चौड़े रास्ते, दोनों तरफ के छायादार पेड़, बिजली की चकाचक रोशनी सबका मन मोह लेती है ।

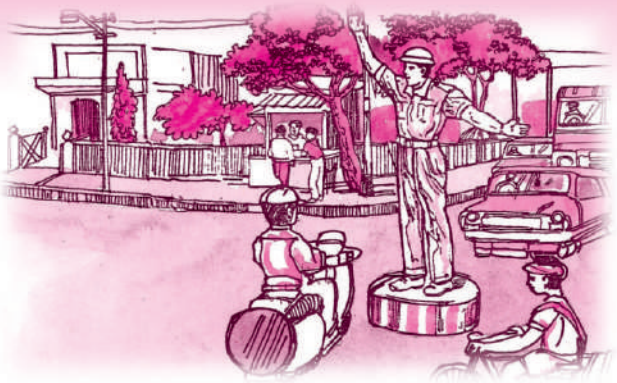

शहर में पढ़ने की सुविधा है । बीमारों का इलाज हो सकता है । काम मिलते हैं । लोग पैसा कमा सकते हैं । आराम से रहते हैं । पर यहाँ फुर्सत ही नहीं है । एक दूसरे के साथ बात ही नहीं करता। शहर में पेड़-पौधे कम ही हैं। गंदी बस्तियाँ, गंदे नाले होते हैं। यहाँ बड़ी भीड़ रहती है। साँस लेने को खुली हवा तक नहीं मिलती। सड़कों पर उड़ती धूल और गाड़ी-मोटरों से निकलते धुएँ से दम घुटने लगता है।

यह सब देख–सुनकर एक सयानी लड़की ने कहा–

शहर कई मायने में अच्छे हैं । लेकिन आजकल यहाँ की आबादी बढ़ रही है। साफ हवा, साफ पानी की किल्लत है । हवा दूषित हो गयी है । इसे रोकना होगा । भाईचारा बढ़ाना होगा । व्यक्तिगत जीवन के सुखों के साथ मानवीय भावों को पनपाना होगा ।

अभी हमें बहुत कुछ करना है

आपके लिए काम :

१) इस विषय में दोनों पक्षों के अच्छे–बुरे के कारण ढूँढ़िए ।

२) एक ऐसा विवादीय विषय चुनकर उसके दोनों पक्षों पर चर्चा कीजिए ।

व्याकरण के पृष्ठ

शब्द – ''एक ध्वनि या ध्वनि–समूह को 'शब्द' क़हते हैं जिसका कोई अर्थ हो'' ।

जैसे – मैं, तुम, अमरूद, लड़की, गाय, गधा, पढ़ना, खाना, पीना आदि।

किसी वाक्य में प्रयोग किए जाने वाले शब्द आठ प्रकार के होते हैं :

संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, क्रिया–विशेषण, समुच्चयबोधक, संबंधबोधक, विस्मयादिबोधक।

संज्ञा– ''किसी व्यक्ति, प्राणी, भाव, वस्तु या स्थान आदि के नाम को 'संज्ञा' कहते हैं।'' ज़ैसे–मीरा, राम, गंगा, हिमालय, गंगोत्रि, सुंदरता, भेड़, पुस्तक आदि।

संज्ञा के मुख्य रूप से पाँचभेद हैं:

व्यक्तिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी व्यक्ति, स्थान या किसी वस्तु विशेष का बोध हो, उसे 'व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे – राम, लक्ष्मण, शकुंतला, ताजमहल आदि।

जातिवाचक संज्ञा – जिस शब्द से एक जाति या जाति के सभी पदार्थों का बोध हो, उसे 'जातिवाचक संज्ञा' कहते हैं। जैसे – भेड़, बकरी, आदमी, पुस्तक आदि।

भाववाचक संज्ञा – जिस शब्द से किसी गुण, दशा, भाव आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं।

जैसे – सुंदरता, बाल्यावस्था, पढ़ाई, कायरता आदि ।

समूहवाचक संज्ञा - जिस शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के समूह का बोध हो, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं जैसे- कक्षा, परिवार, झुंड, गुच्छा, मंडली आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञा - जिस शब्द से किसी वस्तु या द्रव्य का बोध हो, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे- सेना, घास, पानी, चाए, चाँती, लकडी आदि

सर्वनाम – ''जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं उन्हें 'सर्वनाम' कहते हैं।''

जैसे – मैं, हम, तू, जो, वह, आप, यह, वह, कुछ, कोई आदि।

सर्वनाम के छह भेद हैं :

१. पुरुषवाचक २. निश्चयवाचक ३. अनिश्चयवाचक

४. संबंधवाचक ५. प्रश्नवाचक ६. निजवाचक

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम :** ''जो सर्वनाम किसी पुरुष या स्त्री के नाम के स्थान पर बोले जाते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।'' जैसे – तुम, वह, मैं, वे, यह आदि।

जैसे : वह गाँव जाता है ।

२. **निश्चयवाचक सर्वनाम :** ''निश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध हो ।''

जैसे– यह, ये, वह, वे आदि ।

जैसे – यह आम मीठा है, **वह** घड़ी है ।

३. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम :** ''अनिश्चयवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध न हो ।''

जैसे : कोई, कुछ ।

जैसे : ऐसा न हो कि **कोई** आ जाए ।

उसने **कुछ** नहीं खाया ।

४. **संबंधवाचक सर्वनाम –** ''संबंधवाचक सर्वनाम वे हैं जो एक सर्वनाम का दूसरे सर्वनाम के साथ संबंध प्रकट करते हैं ।

जैसे : जो देता है, **सो** लेता है ।

जैसा करोगे, **वैसा** भरोगे ।

जिसकी लाठी, **उसकी** भैंस ।

५. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – ''प्रश्नवाचक सर्वनाम वे हैं जिनसे किसी प्रश्न का बोध हो ।''

जैसे – तुम **क्या** खा रहे हो ?
अंदर **कौन** है ?

६. **निजवाचक सर्वनाम :** ''निजवाचक सर्वनाम वे हैं, जहाँ वक्ता अपने लिए 'आप' शब्द का प्रयोग करता है ।'' जैसे– यह काम मैं स्वयं कर लूँगा । मैं अपने आप खाना बना रहा हूँ ।

❖ क्रिया – ''जिस शब्द से काम का करना या होना जाना जाए, उसे क्रिया कहते हैं । जैसे– जाता है, दौड़ता है, पढ़ा, गाया, खाएगा आदि ।

❖ लिंग – 'लिंग' का अर्थ है 'चिह्न' । संज्ञा के जिस रूप से व्यक्ति की जाति का बोध हो, उसे लिंग' कहते हैं । हिंदी में दो लिंग होते हैं– पुल्लिगऔर स्त्रीलिंग ।

पुल्लिग– पिता, पुत्र, बंदर, पुजारी, मोर, बाल, वृद्ध, स्वामी, तपस्वी आदि ।

स्त्रीलिंग– माता, पुत्री, बंदरिया, पुजारिन, मोरनी, बाला, वृद्धा, स्वामिनी, तपस्विनी आदि ।

❖ वचन– संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के जिस रूप से संख्या का बोध हो, उसे 'वचन' कहते हैं । हिंदी में वचन दो– एकवचन और बहुवचन हैं :–

एकवचन - ''शब्द के जिस रूप से एक ही प्राणी या पदार्थ का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं।'' जैसे- तोता, घोड़ा, भैंस, गाय, पुस्तक, नदी आदि।

वहुवचन - ''शब्द के जिस रूप से एक से अधिक प्राणियों या वस्तुओं का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे- तोते, घोड़े, भैंसें, गायें, पुस्तकें, नदियाँ आदि।

❖ विशेषण– ''जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करे, उसे विशेषण कहते हैं । जैसे– काला घोड़ा, सफेद फूल ।

❖ विशेष्य– जिसकी विशेषता बतलायी जाए, वह 'विशेष्य' कहलाता है ।'

जैसे– 'काला घोड़ा' में 'काला' विशेषण है और 'घोड़ा' विशेष्य । 'अच्छा विद्यार्थी' में 'अच्छा' विशेषण है और 'विद्यार्थी' विशेष्य । 'तीस घोड़े' में 'तीस' विशेषण है और 'घोड़े' विशेष्य । इसी प्रकार दुबला आदमी, पालतू कुत्ता, गहरा कुआँ आदि ।

❖ क्रिया विशेषण– ''जिस शब्द से 'क्रिया' या दूसरे 'क्रिया–विशेषण' की विशेषता प्रकट हो, उसे 'क्रिया–विशेषण' कहते हैं ।

जैसे– राम धीरे–धीरे टहलता है । राम वहाँ टहलता है । वह अचानक आ गया। वह प्रतिदिन मंदिर जाता है । पहले तौलो, फिर बोलो । उतना खाओ जितना हजम हो । अब मैं क्या करूँ ? आदि । 'वह धीरे चलता है ।' इस वाक्य में 'धीरे' क्रिया–विशषण है । 'वह बहुत धीरे चलता है ।''बहुत' भी क्रिया–विशेषण है, क्योंकि यह दूसरे क्रिया–विशेषण 'धीरे' की विशेषता बतलाता है ।

राष्ट्रीय गान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

पंजाब, सिन्ध, गुजरात, मराठा, द्राविड़ उत्कल बंग।

विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा, उच्छल जलधि तरंग।

तव शुभ नामे जागे,

तव शुभ आशिष माँगे,

गाहे तव जय गाथा।

जन-गण-मंगलदायक जय हे, भारत भाग्य विधाता।

जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।